मासिक

गुरमत ज्ञान

ISSN 2394-8485

३/-

मार्गशीर्ष-पौष संवत् नानकशाही ५५६ दिसंबर 2024 वर्ष १८ अंक ४

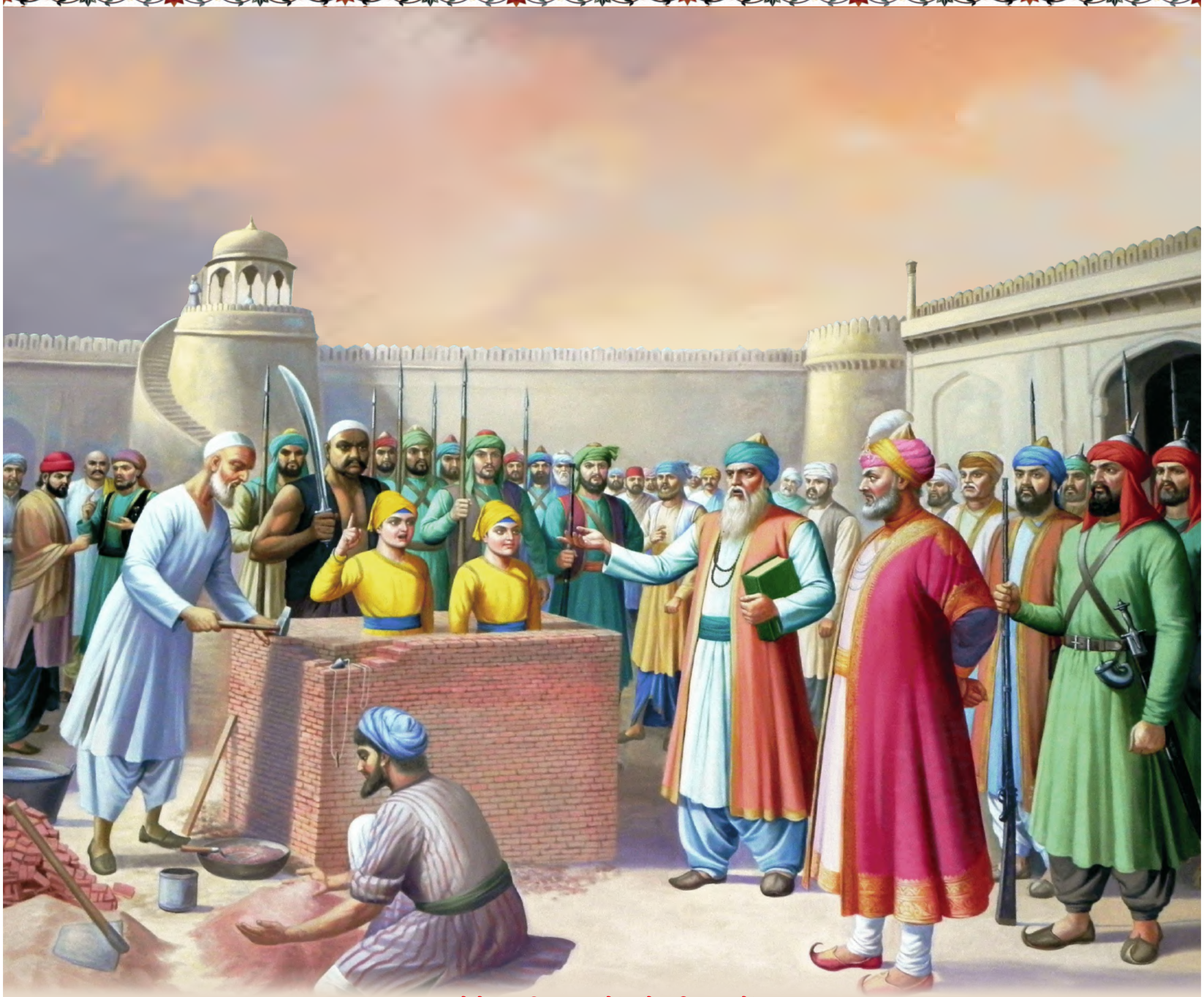

छोटे साहिबज़ादों को दीवार में
जिंदा चिन कर शहीद किए जाने का दृश्य

किला श्री अनंदगढ़ साहिब, श्री अनंदपुर साहिब

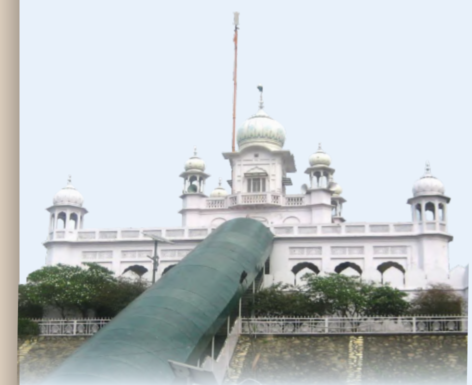

गुरुद्वारा श्री परिवार विछोड़ा साहिब

गुरुद्वारा श्री जोती सरूप साहिब,
श्री फतिहगढ़ साहिब

गुरुद्वारा श्री कतलगढ़ साहिब,
श्री चमकौर साहिब

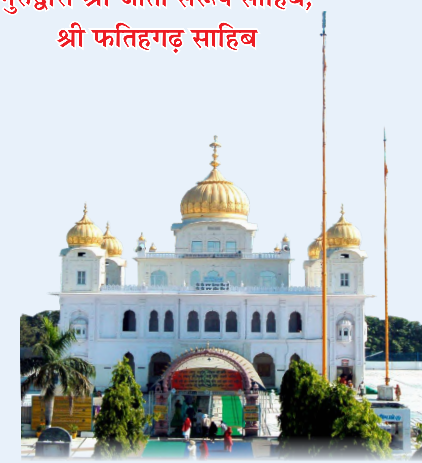

गुरुद्वारा श्री फ़तिहगढ़ साहिब

गुरुद्वारा श्री ठंडा बुर्ज साहिब, श्री फ़तिहगढ़ साहिब

ੴ सतिगुर प्रसादि॥
गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

मार्गशीर्ष–पौष संवत् नानकशाही 556
वर्ष 18 अंक 4 दिसंबर 2024

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	10	रुपये
आजीवन (देश)	100	रुपये
सालाना (विदेश)	250	रुपये
प्रति कापी	3	रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
बड़े साहिबज़ादों की शहीदी : चमकौर साहिब की जंग 8
–डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
सैण रूपि हरि जाइ कै आइआ राणै नो रीझाई। 12
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
साका सरहिंद 15
–डॉ. नयना शर्मा
शहादत का स्रोत 20
–स. गुरचरनजीत सिंघ (लांबा)
चमकौर–युद्ध के महान् शहीद : भाई संगत सिंघ जी 23
–डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल
बाबा गुरबखश सिंघ जी शहीद 25
–स. मोहन सिंघ उरलाणा
. . . श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी 30
–डॉ. मनजीत कौर
गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब 36
–डॉ. परमवीर सिंघ
गुरुद्वारा : सैद्धांतिक और व्यावहारिक स्वरूप 40
–सतविंदर सिंघ फूलपुर
कविताएं 45
–स. करनैल सिंघ सरदार पंछी
खबरनामा 46

गुरबाणी विचार

पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु ॥
मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा साहु ॥
ओट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु ॥
बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥
जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ॥
करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ीआहु ॥
बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥
सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥
पोखु सुोहंदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ॥११ ॥ *(पन्ना १३५)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी महाराज माझ राग में 'बारह माहा' बाणी की इस पउड़ी में पौष मास की ऋतु की पृष्ठभूमि में दांपत्य जीवन के संकेतों के प्रसंग में जीव-स्त्री को परमात्मा-पति की खुशियां प्राप्त करने वाला गुरमति मार्ग दरसाते हैं।

गुरु जी का कथन है कि पौष माह के अत्यंत कठोर एवं निष्ठुर शीत के महीने में जीव-स्त्री को शीत के कारण वनस्पति पर एकत्रित हुआ जल कुछ नहीं कहता अर्थात् वह जीव-स्त्री सांसारिकता और इसमें विद्यमान विषय-विकारों के पाले से बची रहती है, जैसे उसका प्रभु-पति उसके गले मिला हुआ है अर्थात् जिसने अपने हृदय में उसकी पावन स्मृति को सकुशल संभाल कर रखा है। ऐसी जीव-स्त्री का मन मालिक के चरण-कमलों के साथ बंधा हुआ होता है और उसका एक-एक श्वास प्रभु-पति के दीदार की तीव्र इच्छा में ही व्यतीत होता है। उस जीव-स्त्री को निर्धनों को पालने वाले मालिक की सेवा का ही सहारा एवं लाभ होता है। प्रभु-पति की सेवा में लगी हुई जीव-स्त्री को विषय-विकार दुखित नहीं करते, क्योंकि वह तो अपना मनुष्य-जन्म रूपी अवसर अच्छे संगियों के साथ मालिक के गुण गायन करने में ही सफल करती है।

गुरु जी फरमान करते हैं कि पौष के महीने में जीव-स्त्री अपने शरीर के रूपाकार के मूल स्रोत प्रभु से सच्चा प्यार कर एकमन-एकचित्त हो जाती है। अध्यात्म के स्रोत प्रभु ने ऐसी नेक जीव-स्त्री का हाथ इस प्रकार पकड़ा होता है कि वह उससे पुनः बिछड़े ही न। ऐसे परमात्मा पर से मैं लाख बार कुर्बान चली जाऊं! सतिगुरु जी कहते हैं कि हे नानक! जीव-स्त्री अपने मालिक के द्वार पर आ जाती है अथवा सभी सांसारिक सहारों को भुला कर मात्र प्रभु का ही सहारा चाहने लगती है। परमात्मा ऐसी दया-दृष्टि वाला है कि उसे उसका मान-सम्मान रखना होता है। परमात्मा बेपरवाह भी है। वह पौष महीने में जिस जीव-स्त्री पर बख्शिश करता है उसका यह महीना सुहावना हो जाता है और यहां-वहां के सभी सुख उसको मिल जाते हैं।

संपादकीय

देश की समृद्धि के लिए घातक है अल्पसंख्यकों में पसरी असुरक्षा की भावना

किसी देश में कानून की प्रधानता और सम्मान तभी कायम रह सकते हैं यदि उस देश के साधन-सम्पन्न लोगों में कानून का भय हो और दबे-कुचले लोगों में कानून के प्रति विश्वास हो। अफ़सोस कि भारत में ये दोनों ही नहीं हैं। दूसरा, किसी देश की समृद्धि का पैमाना होता है कि उस देश में दबे-कुचले और अल्पसंख्यक लोगों में सुरक्षा की भावना विद्यमान हो। भारत में यह भावना भी दूर तक नज़र नहीं आती। देश की आज़ादी से लेकर अब तक भारत सरकार ने पंजाब और सिक्खों का एक भी मसला हल नहीं किया, बल्कि सिक्खों के लिए नये से नये और मसले खड़े किये जा रहे हैं। बीते दिनों एविएशन सुरक्षा ब्यूरो द्वारा एक फरमान जारी किया गया कि एयरपोर्ट पर काम करने वाले सिक्ख कृपाण पहन कर नहीं आ सकते। कृपाण पर पाबंदी वाला यह फ़ैसला किसी भी दृष्टिकोण से वाजिब नहीं। अब तक के इतिहास में ऐसी कोई भी घटना नहीं घटी कि किसी अमृतधारी सिंघ की कृपाण से कोई ख़तरा पैदा हुआ हो। हां, १५ जून, २०२० ई. को भारत-चीन सरहद पर लद्दाख़ की गलवान घाटी में जहाँ निहत्थे ग़ैरसिक्ख भारतीय फौजियों का चीनी फौजियों ने भारी नुकसान किया, वहाँ भारतीय फ़ौज के एक अमृतधारी सिक्ख सिपाही सरदार गुरतेज सिंघ ने अपनी कृपाण से चीनी फ़ौजी को मार कर फिर उसी के हथियार द्वारा सात अन्य हमलावर चीनी फौजियों को मार गिराया और देश की सरहद व सम्मान की रक्षा की। यह बताने से तात्पर्य है कि देश के किसी भी हिस्से में देश के हित और मानव-कल्याण के लिए तो सिक्ख की कृपाण चल सकती है, मगर यह कभी भी देश, समाज या कानून के लिए ख़तरा नहीं बन सकती और न ही आज तक ऐसा हुआ है। फिर एयरपोर्ट पर कार्यरत सिक्खों के कृपाण पहनने पर पाबंदी लगाने का सरकार के पास क्या आधार है?

१८वीं सदी का इतिहास गवाह है कि ख़ालसे ने कृपाण उठा कर विदेशी हमलावरों से लोहा लेते हुए देश की आन, बान, शान और संस्कृति को बचाया है। भारतीय संविधान भी सिक्खों को कृपाण बनाने, बेचने और पहनने की आज्ञा देता है। कनाडा देश की घरेलू उड़ानों में कृपाण पहन कर सफ़र करने और एयरपोर्ट पर विचरने की इजाज़त कनाडा सरकार की तरफ से

दी गई है। अपने मुल्क में संविधान द्वारा दिए गए अधिकारों के विपरीत जाकर अथॉरिटी द्वारा एयरपोर्ट पर काम करने वाले अमृतधारी सिक्खों के कृपाण पहनने पर पाबंदी लगाना अपने ही देश में सिक्खों को ग़ुलामी और बेगानेपन का एहसास कराने वाली कार्यवाही है, जो कदापि देश की एकता और अखंडता के हित में नहीं है।

देश में पसर रही नफ़रत और आतंकवादी मानसिकता भी अल्पसंख्यकों के लिए बन रही है ख़तरा

देश में पसर रही नफ़रत और आतंकवादी मानसिकता देश की एकता, अखंडता और संपन्नता के लिए बड़ा ख़तरा बनती जा रही है। यह मानव जीवन-मूल्यों के लिए भी ख़तरा बन रही है। दूसरी बात, अल्पसंख्यकों के प्रति नफ़रत जब सभी हदें पार कर जाये तो यह अपराधी मानसिकता धारण कर जाती है। भारत की इसी अपराधी मानसिकता का सिक्खों को जून १९८४ ई. और नवंबर १९८४ ई. में शिकार होना पड़ा। २०२१ ई. में किसानी आंदोलन की सफलता को सरकारी तंत्र द्वारा अपनी पराजय समझ कर दुनिया भर में सिक्खों को बदनाम करने की कार्यवाहियां तेज कर दी गईं। योजनाबद्ध ढंग से भारतीय फ़िल्मों में सिक्ख चेहरों को गद्दार के किरदार में फिल्माना शुरू कर दिया गया।

पिछले दिनों कनाडा के एक मंदिर में भारतीय डिप्लोमेट्स कोई मीटिंग कर रहे थे। सिक्ख मानवाधिकारों की बात करने वाले कुछ सिक्ख भारतीय डिप्लोमेट्स तक अपनी बात पहुँचाने के लिए मंदिर के बाहर शांतमयी धरना-प्रदर्शन कर रहे थे। कुछ शरारती तत्वों द्वारा इसमें खलल डाला गया। सांप्रदायिक विचारधारा रखने वाले कुछ भारतीय मीडिया चैनलों द्वारा सिक्खों के इस शांतमयी धरना-प्रदर्शन को मंदिर पर हमला करार दे दिया गया। देश के सबसे ज़िम्मेदार पद पर बैठे एक शख्स ने तथ्यों की जांच-पड़ताल किये बिना, सिक्खों द्वारा कनाडा के मंदिर पर हमले का बयान जारी कर दिया। वास्तव में यह सब पूर्वनियोजित साजिश का हिस्सा था। इस सबके पीछे एकमात्र उद्देश्य यह था कि कनाडा में सिक्ख नौजवानों के कत्ल के पीछे देश के ज़िम्मेदार नेताओं का नाम आने पर लोगों का ध्यान भटका कर सिक्खों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बदनाम करना। सिक्ख-विरोधी मीडिया ने मंदिर पर हमले वाली झूठी ख़बर को सांप्रदायिक रंगत देकर हिंदू-सिक्ख एकता में दरार पैदा करने की कोशिश की। कनाडा में आतंकवादी मानसिकता वाले कुछ लोगों को भड़का कर गुरुद्वारा साहिब पर हमला करवाया गया। इन शरारती तत्वों द्वारा वाहनों की तोड़फोड़ की गई और उन्हें आग लगा कर जलाया

गया। इन लोगों की आपराधिक मानसिकता तब जगज़ाहिर हो गई जब ये लोग लूट, चोरी, कत्ल, किडनैपिंग और फिरौती मांगने जैसे घिनौने अपराधों के बदले जेल काट रहे बदमाशों के 'ज़िंदाबाद' के नारे लगाते हुए सिक्खों को दोबारा '८४' याद कराने की बात करते सुने गए। जून १९८४ ई. में श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब, श्री अकाल तख़्त साहिब तथा ३६ के करीब अन्य गुरुद्वारा साहिबान पर तत्कालीन कांग्रेस सरकार द्वारा भारतीय फ़ौज के माध्यम से हमला करवाने वाली घटना के बाद भी इस नफ़रत भरी आतंकवादी मानसिकता वालों का मन नहीं भरा। ये लोग भारत में से फौज मंगा कर कनाडा स्थित गुरुद्वारे गिराने की बातें करते सुने गए। सर्वधर्म सद्भाव का उपदेश देने वाले गुरुद्वारा साहिबान के प्रति आखिर इतनी नफ़रत क्यों? भारतीय पक्षपाती मीडिया की तरफ से कनाडा में हिंदू-सिक्ख एकता के लिए ख़तरा बने इन शरारती तत्वों की घिनौनी कार्यवाहियां दिखाने से गुरेज़ किया गया। कुछ भारतीय मीडिया चैनलों की तरफ से नफ़रत की पूरी आग फैलाने के बावजूद बुद्धिमान हिंदू भाइयों और सिक्खों ने आपसी भाईचारा बनाए रखा तथा सांप्रदायिक मीडिया द्वारा हिंदू-सिक्ख विभाजन करने की कोशिश को नाकाम किया। यह सारा घटनाक्रम कई सवाल खड़े कर गया है, जो भारी चिंता और चिंतन का विषय है। भारत में बसे हुए अल्पसंख्यकों व ख़ास कर सिक्खों के प्रति भारतीय शासकों की नफ़रत भरी सोच देश को किस तरफ लेकर जायेगी? क्या भारत में अल्पसंख्यकों के प्रति दमनकारी नीति देश की एकता-अखंडता को बचा पाएगी? क्या नवंबर, १९८४ ई. कत्लेआम, गोधरा कांड, मणिपुर कांड के बाद भारतीय दंगयी विचारधारा अब विदेशों तक पहुँच कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत को बदनाम कर देगी? क्या महान कहे जाते भारत देश के जीवन मूल्य इस रसातल तक जा पहुँचे हैं कि यहाँ देश की आज़ादी और विकास में बड़ा योगदान डालने वाले सिक्खों को आतंकवादी, अलगाववादी कह कर बदनाम किया जायेगा और देश व समाज के लिए कलंक बने बदमाशों की विचारधारा का समर्थन करने वालों को सत्यवादी व देश-भक्त समझा जायेगा? क्या इस घटनाक्रम को रोक पाने के लिए भारत के बुद्धिमान नेता कोई ठोस फ़ैसला लेंगे?

बड़े साहिबज़ादों की शहीदी : चमकौर साहिब की जंग

-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'*

दशमेश पिता जी ने अत्याचार, अन्याय और अधर्म का मुकाबला करने के लिए एक मज़बूत व शक्तिशाली लहर पैदा की थी। सन् १६८६ ई. में भंगाणी के युद्ध में गुरु जी से पूरी तरह से मात खाकर 'बाईधार' के राजाओं को समझ में आ गया कि अब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की आगवानी में पैदा हुई लहर इतनी शक्तिशाली हो गई है कि इसे खत्म करना या दबाना उनके बस की बात नहीं रही है।

जैसे-जैसे श्री अनंदपुर साहिब में सिक्ख संगत की आमद बढ़ने लगी, वैसे-वैसे पहाड़ी शासकों, विशेषकर भीम चंद की चिंता बढ़ने लगी। सबको पता है कि सन् १६९९ ई. में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने एक नए पंथ, खालसा पंथ की सृजना (स्थापना) की थी। उन्होंने घोषित किया कि सभी मनुष्य समान हैं। कोई छोटा या बड़ा नहीं। ऊंच-नीच का अंतर तो सत्ता के भूखे स्वार्थी शासकों ने धार्मिक कट्टरपंथियों के साथ मिलकर पैदा किया है। हमारे दरबार में किसी को भी निम्न जाति का नहीं समझा जाएगा और 'कर्मण' (कर्मों) को प्राथमिकता दी जाएगी। इससे तथाकथित ऊंची जाति के अभिमानी लोग परेशान हो उठे, क्योंकि धर्म के ठेकेदारों तथा शासकों का काम व शासन ऊंच-नीच का भ्रम फैलाकर ही तो चलता था, फलता-फूलता था, अत: अब उनके लिए गुरु जी की कूटनीति व रणनीति तथा लोकप्रियता सहन करनी मुश्किल हो रही थी। उन्होंने गुरु जी के विरुद्ध औरंगजेब के पास झूठी व मनगढ़त शिकायत की। उस समय औरंगजेब भारत के दक्षिण क्षेत्र में था। उसने वहीं से आदेश देकर अपनी सेना को श्री अनंदपुर साहिब पर हमला करने के लिए भेज दिया। लाहौर एवं सरहिंद प्रांत के सूबेदारों ने भी सेना जमा कर ली। ऊपर से सभी हिंदू पहाड़ी राजा भी लाम-लश्कर लेकर आ गए और सबने मिलकर श्री अनंदपुर साहिब को घेरे में ले लिया। अंत में १७०४ ई. में गुरु जी ने पांच प्यारों (सिंघों) के विनम्रता भरे आदेश पर श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ दिया। फिर उफनती हुई सरसा नदी पार करते ही एक बड़ा युद्ध हुआ। इसमें दोनों पक्षों की भारी क्षति हुई।

नदी पार करने के बाद दशम पातशाह जी

*बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०

का परीवार दो हिस्सों में बंट गया। दो छोटे साहिबज़ादे— बाबा ज़ोरावर सिंघ जी, बाबा फतहि सिंघ जी अपनी दादी मां माता गुजरी जी के साथ एक ओर चले गए तथा बड़े साहिबज़ादे— बाबा अजीत सिंघ जी, बाबा जुझार सिंघ जी अपने पिता जी के पास रह गए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सरसा नदी को पार कर चमकौर साहिब पहुंच गए। यहां पर एक छोटी-सी कच्ची गढ़ी (हवेली) थी, जो कि चौधरी बुधी चंद की हवेली के नाम से प्रसिद्ध थी। चौधरी ने निवेदन किया, ''आप यहां पर ठहरिए हवेली में। आपने हम सबके लिए बहुत कष्ट व दुख सहे हैं। हमें आपकी सेवा कर खुशी प्राप्त होगी। बाहर खुली जगह की अपेक्षा हवेली में ठहरने से सुविधा रहेगी।''

मुगल सेना ने उस गढ़ी पर हमला बोल दिया। अगले दिन विश्व का एक अत्यंत विचित्र युद्ध आरंभ हुआ। एक ओर दस लाख सैनिक नए अस्त्रों से लैस तथा दूसरी ओर केवल चालीस जांबाज़, मगर भूखे-प्यासे सिंघ पुराने व भोथरे हथियार लिए डटे हुए थे। इस संबंध में स्वयं श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने 'जफ़रनामा' में यूं लिखा है :

गुरसनह चिह कारे कुनद्द चिहल नर ।।
कि दह लक बिआयद बरो बेख़बर ।।१९ ।।

मुगल सेना ने चमकौर की गढ़ी पर हमला किया, किन्तु गुरु जी के तीरों के सामने वे विवश होकर रह गए। एक और विचित्र बात थी कि गत सभी युद्धों की अपेक्षा इस युद्ध में दशमेश पिता जी ने अधिक तीर चलाए। मात खा रहे मुगलों ने सामूहिक हमला करने की ठान ली। नाहर खान, गौरत खान और ख़्वाजा मोहम्मद मरदूद ने तीन तरफ से एक साथ हमला किया। गुरु जी ने तीनों दिशाओं में तीर छोड़ने शुरू कर दिए। नाहर खान एवं गैरत खान तो मारे गए, परंतु ख़्वाजा मोहम्मद मरदूद गढ़ी की दीवार के साथ छिपकर बच रहा। सफलता मिलती न देख मुगल सेना ने दुर्ग के द्वार पर ही धावा बोल दिया। सिक्खों ने भी पांच-पांच की संख्या में दुर्ग-द्वार को बचाने का फैसला कर लिया। गुरु की फौज ने दिल्ली, लाहौर, सरहिंद तथा 'बाईधार' राजाओं की शस्त्रबद्ध सेनाओं के साथ जांबाज़ी व बहादुरी के साथ लड़ना शुरू कर दिया। गुरु के शूरवीरों ने दुश्मनों की सेना को भारी क्षति पहुंचाई। उन्होंने अनेक शत्रुओं को मौत के घाट उतार दिया और एक-एक सिंघ शहादत प्राप्त करता चला गया। शत्रु सेना के सेनापति भी अति हैरान व परेशान थे कि ये सिक्ख शूरवीर योद्धा आखिर किस मिट्टी के बने हुए हैं। इनमें से एक-एक सिंघ हमारे सवा लाख पर भारी पड़ रहा है। दुश्मन दंग था कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इनको

कैसी घुट्टी (अमृत की दात) पिला रखी है? कैसा आबे-हयात पिलाया हुआ है?

चल रहे युद्ध का अवलोकन कर कलगीधर पिता जी समझ गए कि यह घमासान युद्ध है। शेष बचे सिक्खों ने विनती की कि आप साहिबज़ादों को साथ लेकर यहां से चले जाओ। गुरु जी ने यह विनती अनसुनी कर दी और दूर हो रही जंग की ओर संकेत किया। सिक्खों ने पुनः आग्रह किया, ''महाराज जी! आपका साहिबज़ादों के साथ दुर्ग छोड़कर चले जाना ही अच्छा है।'' उन्होंने फरमान किया, ''आप किन साहिबज़ादों की बात करते हो? आप सभी मेरे साहिबज़ादे हो!'' सिंघ शांत हो गए और गुरु जी के आगामी कदम की प्रतीक्षा करने लगे। तभी बड़े साहिबजादा बाबा अजीत सिंघ जी ने स्वयं जंग में लड़ने-जूझने का अपना निर्णय सुनाया। गुरु जी ने वचन किया, ''इससे अच्छा समय क्या हो सकता है? जूझिए!'' इस संबंध में सैनापति बयान करता है :

ता ते या सम समां न कोई।
तुम दोनहु संठार भल जोई।

दशमेश पिता जी ने बाबा अजीत सिंघ जी को पांच सिंघों— भाई मोहकम सिंघ जी (पांच प्यारों में से एक), भाई ईशर सिंघ जी, भाई लाल सिंघ जी, भाई नंद सिंघ जी, भाई केसर सिंघ सहित रणक्षेत्र में जूझने के लिए भेज दिया। गुरु जी ने स्वयं अपने बड़े साहिबज़ादा जी को विदा किया। उस समय बाबा अजीत सिंघ जी की आयु १८ वर्ष के लगभग थी, परंतु जिस बहादुरी, हौसले, शौर्य के साथ उन्होंने मुकाबला किया, वह एक लामिसाल ऐतिहासिक घटना बन चुकी है। उन्होंने शत्रुओं पर इतनी तेजी से बाण छोड़े कि एक बार तो उन्हें पीछे हटने पर मजबूर कर दिया और सभी भौचक्के रह गए। उनके पास जो बाण थे, वे खत्म हो गए। फिर बाबा जी ने तेग व भाले के साथ शत्रु-सेना का मुकाबला करना शुरू कर दिया। उनके साथ जो पांच सिंघ थे, वे दुश्मनों पर भालें-तेग के साथ वार करते रहे। वे बाबा अजीत सिंघ जी की सुरक्षा कर उन्हें दुश्मनों में घिरने से बचाना चाहते थे। बाबा जी ने एक मुगल सरदार के सीने में भाला भोंक डाला। जब भाला बाहर खींचा तो भाला बीच में से टूट गया। सैनापति कवि के शब्दों में :

टूट के सांग दुइ टूक हुइ भुइ परी,
गही तरवार दल बहुत मारे।
एक के सीस धरि दुइ टुकरे करे,
दुइ के सीस धरि करत चारे।
भांत इह पूर परवार दीने कई,
रकत दरीआउ मैं परे सारे।

इस जंग में पांचों सिंघ शहीद हो गए और बाबा अजीत सिंघ जी अकेले पड़ गए। उन्हें एक अन्य मुगल सरदार ने भाला दे मारा,

मगर वे वार से बच गए और उनका घोड़ा घायल हो गया। पांव के बल खड़े होकर जूझते रहे। भारी संख्या में दुश्मन उन पर टूट पड़े तथा उन्हें बहुत ज्यादा घायल कर दिया। बाबा अजीत सिंघ जी वहीं पर मैदान-ए-जंग में शहादत प्राप्त कर गए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने यह सब कुछ होते हुए अपनी आंखों से देखा और अपने बड़े साहिबज़ादा की शहादत पर 'बोले सो निहाल, सत श्री अकाल' का जयकारा बुलंद आवाज़ में गुंजाया। गुरु जी ने अकाल पुरख का शुक्राना अदा किया।

दूसरे साहिबज़ादा बाबा जुझार सिंघ जी ने जब अपने बड़े भाई को शहादत प्राप्त करते देखा, तब उन्होंने भी बड़े चाव एवं उत्साह के साथ स्वयं को युद्ध-क्षेत्र में कौशल दिखाते हुए शहीद होने हेतु पेश किया :

जब देखयो जुझार सिंघ,
समां पहूचिओ आनि।
दोरिओ दल मैं धाइ कै,
कर मैं रही कमान। *(सैनापति)*

साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सहर्ष रणभूमि में जाने की आज्ञा दे दी। भाई हिम्मत सिंघ जी, भाई साहिब सिंघ जी (पांच प्यारों में शामिल रहे), भाई मोहर सिंघ जी और भाई लाल सिंघ जी बाबा जुझार सिंघ जी के साथ हो लिए। उस समय साहिबज़ादा बाबा जुझार सिंघ जी की आयु केवल १४ वर्ष थी। शत्रु-सेना के हौसले बढ़े हुए थे। गढ़ी में से बाहर निकलने पर बाबा जी पर तुरंत हमला हो गया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने दुश्मनों पर तीरों की बौछार कर दी। वे घबराकर पीछे हटने लगे। तीरों की छांव में साहिबज़ादा जी और उनके साथी सिंघ शूरवीर मैदाने-जंग में आगे बढ़े। साहिबज़ादा जी ने जौहर दिखाते हुए कई शत्रुओं को यमलोक पहुंचा दिया, परंतु भारी संख्या में मौजूद शत्रु-सैनिकों ने उन्हें अपने घेरे में ले लिया। फलस्वरूप साहिबज़ादा जी और उनके साथी सिंघ शहादत प्राप्त कर गए।

साहिबजादा बाबा अजीत सिंघ जी तथा बाबा जुझार सिंघ जी की शहादत २२ दिसंबर, १७०४ ई. को शाम के वक्त हुई थी। दशमेश पिता जी जैसा महान एवं बुलंद हौसले वाला पिता ही अपने जिगर के टुकड़ों को रणभूमि में जूझने और शहीद होने के लिए भेज सकता है। शाम के वक्त श्री चमकौर साहिब का यह युद्ध गुरु जी के दो बड़े साहिबज़ादों तथा अन्य सिक्खों की शहादत के बाद बंद हो गया। इस युद्ध की समाप्ति का वर्णन गुरु जी ने अपने 'जफरनामा' में यूं किया है :

चराग़ि जहां चूं शुदह बुरकॉ पोश।।
शहि शब बरामद हमा जलवह जोश।।४२।।

सैण रूपि हरि जाइ कै आइआ राणै नो रीझाई।

-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ*

भक्त सैण जी की गणना भक्ति काल के प्रमुख संतों में होती है। वर्ग, व्यवसाय, क्षेत्र, कुल के समस्त पूर्वाग्रहों को तोड़ते हुए उन्होंने अपनी भावना के प्रताप से अध्यात्म जगत का परम पद प्राप्त कर संसार को आश्चर्यचकित कर दिया। उनका जीवन, सिद्धता और बाणी, सभी प्रेरणादायी हैं। श्री गुरु अरजन साहिब ने भक्त सैण जी की बाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित कर उनकी श्रेष्ठता को सम्मान और विस्तार दिया। भाई गुरदास जी के अनुसार प्रेम-भक्ति की भावना उनमें भक्त कबीर जी को देख कर उत्पन्न हुई थी। ऐतिहासिक स्त्रोतों के अनुसार भक्त सैण जी का जन्म मध्य प्रदेश के रीवा में हुआ था। उनका जीवन-काल सन् १३९० से सन् १४४० तक का माना गया है।

भक्त जी के पिता का नाम श्री मुकंद राय जी और माता का नाम माता जीवनी जी था। उनका विवाह माता मूरती जी के साथ हुआ था। भक्त जी व्यवसाय से नाई थे।

भक्त सैण जी ने अपने समय के प्रसिद्ध संत स्वामी रामानंद जी को गुरु धारण किया था। वे जीवन-यापन हेतु नाई का कार्य किया करते और अतिरिक्त समय में साधु-संतों की संगत करते व परमात्मा का ध्यान करते थे। माना जाता है कि वे रीवा के राजा, राजाराम की सेवा में नाई के रूप में कार्य किया करते थे। भाई गुरदास जी ने भी अपनी वारों में इसे प्रमाणित किया है :

सुणि परतापु कबीर दा
दूजा सिखु होआ सैणु नाई।
प्रेम भगति राती करै भलकै
राज दुआरै जाई। (वार १०:१६)

भाई गुरदास जी के अनुसार भक्त सैण जी का दिन राजा की सेवा में व्यतीत होता। उनका भक्ति और संगत का समय रात्रि का था। भक्त जी के जीवन की एक प्रसिद्ध घटना राजा की सेवा से अनुपस्थित हो जाने की है। भक्त सैण जी की भक्ति का यश चतुर्दिग फैल चुका था। लोग उनका बड़ा सम्मान किया करते थे। एक बार कुछ संत भक्त जी से मिलने आये। भक्त जी ने स्वभाव के अनुसार उनकी

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९

यथायोग्य सेवा की। कहते हैं कि संतों की आवभगत और संगत में तीन दिन व्यतीत हो गये। भक्त जी ने भावनाओं के वश होकर संतों की सेवा को प्राथमिकता दी और राजा की सेवा में नहीं गये। जब संतों के समूह के विदा होने के पश्चात भक्त जी राजा के महल में गये तो मन में तीन दिन अनुपस्थित रहने का खेद था। भक्त जी ने खेद प्रकट करना चाहा, किन्तु इसके विपरीत राजा ने बड़ी तत्परता व प्रसन्नता से उनका स्वागत किया और कहा कि "तीन दिन उन्होंने जिस भांति उसकी सेवा की है उससे वह अति अभिभूत है। ऐसी सेवा उन्होंने पहले कभी नहीं की।" भक्त सैण जी समझ गये कि परमात्मा ने स्वयं उनके रूप में प्रकट होकर तीन दिन राजा की सेवा कर उनकी लाज रखी है। उन्होंने राजा से कहा कि वह भाग्यशाली है कि उसे स्वयं परमात्मा दर्शन देने आये थे। भाई गुरदास जी ने भी इस घटना का उल्लेख किया है :

आए संत पराहुणे कीरतनु होआ रैणि सबाई।
छडि न सकै संत जन
राज दुआरि न सेव कमाई।
सैण रूपि हरि जाइ कै आइआ राणै नो रीझाई।
साध जनां नो विदा करि
राज दुआरि गइआ सरमाई।
राणै दूरहुं सदि कै गलहुं कवाइ खोलि पैन्हाई।
वसि कीता हउं तुधु अजु बोलै
राजा सुणै लुकाई।
परगटु करै भगति वडिआई।। (वार १०:१६)

भाई गुरदास जी के अनुसार, भक्त सैण जी के पास संत-मंडल आया तो दिन-रात भजन-कीर्तन होता रहा। भक्त जी राजा के महल में सेवा के लिये नहीं जा सके तो परमात्मा ने स्वयं भक्त जी का रूप धारण कर राजा को सेवा से प्रसन्न किया। संतों को विदा कर जब भक्त सैण जी महल में सकुचाते हुए पहुंचे तो राजा ने दूर से देखते ही अपने निकट बुला लिया तथा अपने गले में धारण किया अंग-वस्त्र उन्हें पहना दिया और कहा कि तुमने मुझे अपने वश में कर लिया है। राजा द्वारा की गई भक्त सैण जी की यह प्रतिष्ठा सभी को ज्ञात हो गई। परमात्मा ने भक्त जी की प्रेम-भक्ति को स्वीकार कर उन्हें महानता प्रदान की थी।

परमात्मा के लिये प्रेम व समर्पण भक्त सैण जी की बाणी में भी प्रकट हुआ है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना ६९५ पर सुशोभित उनकी बाणी में परमात्मा के प्रति भावना को ही सच्ची आरती बताया गया है :

धूप दीप घ्रित साजि आरती ।।

वारने जाउ कमलापाती ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६९५)

लोग धूप बत्ती जला कर, घी के दीये जला कर परमात्मा की आरती करते हैं, ताकि उसकी कृपा प्राप्त हो सके। सच्ची आरती तो परमात्मा की महिमा को जान कर, उस पर प्रेम, उमंग से बलिहार जाना है। परमात्मा की महिमा अनंत है।

मंगला हरि मंगला ।।
नित मंगलु राजा राम राइ को ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६९५)

परमात्मा कल्याण करने वाला है। उसकी महिमा के नित्य गायन से, सर्वदा गायन से हित होता है।

गुरु साहिबान का भी यही पंथ था :

मन रे सदा अनंदु गुण गाइ ।।
सची बाणी हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३६)

जिसे भक्त सैण जी ने 'परमात्मा का मंगल' कहा उसे श्री गुरु अमरदास साहिब ने 'परमात्मा का आनंद गुण' कहा। श्री गुरु अमरदास साहिब ने कहा कि इससे परमात्मा मिल जाता है। भक्त सैण जी ने भी परमात्मा की महिमा के गायन का ऐसा ही फल बताया है :

मदन मूरति भै तारि गोबिंदे ।।
सैनु भणै भजु परमानंदे ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६९५)

परमात्मा अपने जन को सभी दुखों, विकारों, माया से उबार कर अपनी कृपा से निहाल कर देने वाला, जीवन-सिद्धि प्रदान करने वाला है। वह परम आनंद का दायक है अर्थात् आवागमन के फेर से मुक्त कर देने वाला है। भक्त जी ने परमात्मा को धवल प्रकाश और उत्तम प्रकाश का स्रोत भी कहा—

"ऊतमु दीअरा निरमलु बाती ।।"

भक्त सैण जी का श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित शबद आरती की बाणी का अंग है जिसे नित्य गुरु-घरों में गायन करने की मर्यादा है। भक्त सैण जी की महिमा का बोध इस तथ्य से ही हो जाता है कि भक्त रविदास जी की बाणी में भक्त नामदेव जी, भक्त कबीर जी, भक्त त्रिलोचन जी, भक्त धंना जी सहित भक्त सैण जी का उल्लेख भी मिलता है। भक्तों-संतों के जीवन और उनकी बाणी दोनों ही काल और क्षेत्र की सीमाओं से परे मानव-कल्याण के सर्वकालिक साधन हैं। उनकी आभा कभी मंद नहीं पड़ने वाली है।

साका सरहिंद

-डॉ. नयना शर्मा*

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ।।
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ।।
इतु मारगि पैरु धरीजै ।।
सिरु दीजै काणि न कीजै ।।
(पन्ना १४१२)

पंजाब की धरती बहादुरों की जननी स्वीकार की जाती है। यहां गुरुओं ने जन्म लिया तथा अपने सत्कर्मों के द्वारा इसे पुण्य-स्थल बना दिया। पुण्य-स्थल पर पुण्यात्माएं विचरण करती हैं। इतिहास साक्षी है कि इस धरती की महक में ऐसा स्रोत है जिसके कारण समय-समय पर यहां त्याग तथा प्रेम निरंतर प्रवाहित होता रहा है। इस मिट्टी में ऐसा बल है कि यहां चाहकर भी कोई दुरात्मा अपना अधिकार नहीं जमा सकती। यदि ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखें तो यहां गुरु-परंपरा के प्रचलन ने एक नवीन दृष्टि दी एवं मानवता के स्थापत्य को एक आधार प्रदान किया। प्रथम गुरु श्री गुरु नानक देव जी से ही इस आधार का सूत्रपात हुआ। फिर दिशा ग्रहण करता हुआ यह विशाल सिक्ख पंथ निज प्रभावान्विति से प्रेरित करता हुआ दशम गुरु तक एक सशक्त माध्यम बना।

दशम गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पराक्रम के विषय में कुछ भी कहना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। गुरु जी युगपुरुष के रूप में एक संत तथा सिपाही का दायित्व समानांतर निर्वाह करते रहे। त्याग की प्रतिमूर्ति, मानवता को एक सूत्र में पिरोकर दृढ़ता प्रदान करने वाले तथा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को गोद में लेकर धरती माता गौरवान्वित अनुभव करती हुई अपने आकार को इतना विशाल अनुभव करती होगी मानो जल, थल तथा आकाश उसकी दीर्घ काया में समाहित हो गए हों। निःसंदेह पंजाब की धरती मानवता के दीपक जलाने वाले सपूतों में अग्रगण्य है। इस मिट्टी की महक ने ही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सरीखे सपूत को एक दृढ़ निश्चयी के रूप में साकार करके कहलवाया :

चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत ।।
हलालस्सत बुरदन ब शमशीर दसत ।। २२ ।।
(ज़फ़रनामा)

यह गुरु परंपरा आद्यंत शौर्य-प्रदर्शन कर मार्ग प्रशस्त करने में सक्षम रही है। भारत की

*C/o : तलवाड़ हाऊस, भगत सिंघ पेट्रोल पंप के पीछे, निकट फव्वारा चौंक, पटियाला— १४७००१

भूमि पर अनेक ऐसी घटनाएं घटी हैं जो इतिहास-प्रसिद्ध हुईं। सबका व्याख्यान तो संभवत: कठिनतर कार्य है, परंतु इस इतिहास में से मार्मिक घटना 'साका सरहिंद' का वर्णन अग्रलिखित है :—

साका सरहिंद इतिहास के हृदय पर एक कठोर प्रस्तर की भांति गढ़ा हुआ व्याख्यान है, जो आततायी पर प्रेम की विजय, असत्य पर सत्य की विजय, कठोरता पर कोमलता की विजय, स्वार्थ पर परमार्थ की विजय का प्रतीक है। इस घटना की स्मृति ही हृदय-विदारक है।

एक ऐतिहासिक सूत्र के अनुसार-- ''यह एक ठंडी तथा वर्षा की रात्रि थी जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने परिवार और लगभग १५०० सिक्खों सहित श्री अनंदपुर साहिब को छोड़ा।'' (ए. सी. अरोड़ा, पंजाब दा इतिहास, पृष्ठ २३३) (ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार सिक्खों की गणना के संबंध में मतभेद हैं ।) जब गुरु जी सरसा नदी के तट पर पहुंचे तो बाढ़ग्रस्त सरसा मानो अपना विकराल मुख खोले सर्वस्व हड़प जाने को तत्पर थी। ऐसे में पुन: आक्रमणकारियों ने गुरु जी को पराजित करने का अनवरत प्रयास किया, परंतु भक्त कबीर जी की उक्ति -- ''कबीर जिसु मरने ते जगु डरै मेरे मनि आनंदु'' के अनुसार गुरु जी अपने शिष्यों के साथ युद्ध का सामना करते हुए भी आनंदित होते रहे। इस युद्ध के परिणामस्वरूप उनकी माता जी तथा छोटे साहिबज़ादे -- बाबा जोरावर सिंघ जी तथा बाबा फतहि सिंघ जी अपने परिवार से बिछड़ गए। ऐसे समय में गुरु-घर में रसोइया का कार्यभार संभालने वाला गंगू, माता गुजरी जी तथा दोनों बहादुर सुपुत्रों को अपने गांव सहेड़ी (नज़दीक मोरिंडा) में अपने घर ले गया। स्वार्थ तथा लालच के वशीभूत होकर पहले उसने माता गुजरी जी की पोटली चुरा ली, तत्पश्चात् वह मोरिंडा के कोतवाल को आगंतुकों का समाचार दे आया। परिणामस्वरूप साहिबज़ादा बाबा जोरावर सिंघ जी, साहिबज़ादा बाबा फतहि सिंघ जी तथा माता गुजरी जी को सरहिंद के सूबेदार वज़ीर खान के समक्ष पेश किया गया। तीनों को सरहिंद किले में एक बुर्ज, जिसे 'ठंडा बुर्ज' कहा जाता था, में नज़रबंद कर दिया गया। रात्रि के प्रहर में भाई मोती राम जी ने नज़र बचाते हुए ठंडे बुर्ज में जाकर माता गुजरी जी तथा दोनों साहिबज़ादों को दूध पिलाने की सेवा निभाई। घटना में इतिहास उनका ऋणी हो गया।

सरहिंद के सूबेदार वज़ीर खान ने दोनों साहिबज़ादों को कचहरी में प्रस्तुत करने की आज्ञा दी । दीवान सुच्चा नंद के नेतृत्व में सिपाही ठंडा बुर्ज में पहुंचे। अब समय दादी

मां व नन्हें पोतों के एक ऐसे वियोग का था जो इतिहास को मर्मभेदी चीत्कार की गुंजार से भरने जा रहा था। इस तथ्य का वर्णन मर्मान्तक ढंग से प्रस्तुत करते हुए योगी अल्ला यार खान लाकबी उर्दू की नज़म शहीदानि-वफा में लिखते हैं :

जाने से पहले आओ गले से लगा तो लूं !
केसों को कंघी कर दूं ज़रा मुंह धुला तो लूं !
प्यारे सरों पे नन्हीं सी कलगी सज़ा तो लूं ।
मरने से पहले तुम को दूल्हा बना तो लूं ! ७२ ।

इस कारुणिक दृश्य-वर्णन के पश्चात दोनों गुरु-पुत्रों को सूबेदार के सामने प्रस्तुत किया गया। दोनों अत्यंत दृढ़ता के साथ वहां जाकर फतहि बुलाने लगे-- ''वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फ़तह ।'' सत्य को मूर्तिमान देखकर सूबेदार विस्मित हो गया, परंतु फिर स्वयं को संयत करते हुए बोला कि साहिबज़ादों को शाही ठाठ-बाठ प्रदान किया जाएगा, यदि वे इसलाम धर्म स्वीकार कर लें। दोनों साहिबज़ादे अपने इरादे पर अडिग रहे। उन्होंने कहा :

हमरे बंस रीति इमि आई ।
सीस देति पर धरम ना जाई ।

सूबेदार साहिबज़ादों की निडरता को देखकर दंग रह गया। उसने दोनों मासूम साहिबज़ादों को जान से मारने की धमकी दी। दोनों साहिबज़ादे पुनः उसी निश्चय से भरकर, आतंक से मुक्त, अपने प्रभु में विश्वास से भरपूर खड़े रहे। सूबेदार ने उन्हें अगले दिन फिर कचहरी में प्रस्तुत करने की आज्ञा दी। रात्रि के समय जेल के अधिकारियों को विशेष हिदायत दी गई कि बलात् मुसलिम धर्म स्वीकार करवाने का प्रत्येक ढंग प्रयोग किया जाए। अगले दिन पुनः दोनों गुरु-पुत्रों को कचहरी में प्रस्तुत किया गया। पुनः वही आत्मविश्वास देखकर सूबेदार चकित रह गया। दोनों साहिबज़ादे सत्य की प्रतिमूर्ति अपनी निष्ठा में यथास्थान खड़े रहे। सूबेदार ने क्रोधित होकर उनका 'दोष' स्थापित करते हुए काज़ी से सज़ा निश्चित करने को कहा। उस समय मलेरकोटला का नवाब शेर मुहम्मद ख़ान भी कचहरी में विद्यमान था। दीवान सुच्चा नंद ने नवाब शेर मोहम्मद ख़ान को स्मरण करवाया कि उनका भाई भी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हाथों युद्ध में मारा गया था, अतः वो इन गुरु-पुत्रों से अपने भाई की मौत का बदला ले लें। दीवान सुच्चा नंद नवाब शेर मुहम्मद ख़ान को भी अपना पक्षधर बनाना चाहता था। नवाब शेर मुहम्मद ख़ान ने पिता के 'दोष' के लिए बच्चों को 'दोषी' नहीं माना। अत्यंत क्रूर सूबेदार वज़ीर खान ने मनमाने ढंग से काज़ी से फैसला करवाया कि निरीह बालकों को ज़िंदा दीवार में चिन दिया जाए। प्रसिद्ध इतिहासकार जेम्ज़ ब्राऊन इस

सम्बंध में लिखता है -- "नए धार्मिक आदर्शों का प्रचार करने वालों पर किए गए अत्याचारों की सभी उदाहरणों में से यह (साका सरहिंद) सर्वाधिक कठोर उपद्रव तथा निर्दय अत्याचार है।"

नवाब मलेरकोटला ने इस निर्णय के संबंध में खंडन प्रस्तुत करते हुए इसे खारिज करने का सुझाव दिया परंतु दुर्भाग्यवश ऐसा न हो सका। नवाब मलेरकोटला कचहरी से उठकर चला गया। इस घटना को 'हाअ का नारा' के नाम से जाना जाता है ।

तत्पश्चात् दोनों साहिबज़ादों का मासूम जिंदगी से दूर परमात्मा की सत्ता की गोद में जाने का समय आ गया। सारे देश में त्राहि का समय था। प्रत्येक की जिह्वा पर इस अत्याचार का विरोध था। उन मासूम पाक फरिश्तों ने तो मानों मृत्यु की गोद में खेलने का निर्णय स्वयं लिया था ।बहुत निर्भीक होकर वे उस ओर बढ़ चले, जो स्थान उनकी अंतिम जीवन-लीला के लिए निश्चित किया गया था।

१३ पौष, संवत् १७६१ को यह घटना घटी थी।

स. कुइर सिंघ ने 'गुरबिलास पातशाही १०' में इस घटना का वर्णन करते हुए लिखा है :

दे कर दूख बहुत अधिकाए ।
तब नीहों में बाल चिनाए ।
बहुत कलेस तुरक तब दीना ।
मुख से नाह उचारन कीना ।

(पृष्ठ २१४)

ईश्वर की इच्छा का अनुसरण करते हुए दोनों साहिबज़ादे किस अंदाज से जा रहे थे, इस दुर्दांत घटना का वर्णन योगी अल्ला यार खान ने 'शहीदानि-वफा' में इस प्रकार किया है :

हाथों में हाथ डाल के दोनों वह नौनिहाल।
कहते हुए ज़बां से बढ़े 'सति श्री अकाल'।
चेहरों पे गम का नाम न: था और न: था मलाल।
जा ठहरे सर पे मौत के,
फिर भी न: था ख्याल।१०७।...
हम जान दे के औरों की जानें बचा चले!
सिक्खी की नीव हम हैं सरों पर उठा चले!
गुरिआई का है किस्सा जहां में बना चले!
सिंघों की सलतनत का
है पौधा लगा चले!१०९।

इस प्रकार यह घटना पंजाब के, भारत के हृदय पर ही नहीं, विश्व के हृदय पर करुणा की जननी बनकर लिखी गई। इस ऐतिहासिक घटना के प्रभावस्वरूप पंजाब में नई क्रांति का जन्म हुआ। यह क्रांति थी नवीन चेतना की। नवीन चेतना के पंजाब की धरती पर पांव पसारते ही मुगलों का मूल उखड़ने लगा। यह घटना उस आधार-भूमि का काम करती है जिस पर देश की आधुनिक स्वतंत्रता ने अपना अधिकार जमाया। आधुनिक संदर्भ में भी

साका सरहिंद प्रासंगिक है।

शासक वर्ग सदा जनसामान्य पर अपने ही ढंग से शासन करता आया है। दूसरी ओर सभी मुगलों या मुसलमानों को अत्याचारी कह देना कहीं भी युक्तिसंगत नहीं है, क्योंकि अत्याचार की योजना तो मात्र हुकूमत करने वाले क्रूर शासक ही बनाते रहे हैं । यह घटना मानवता के अधिकार क्षेत्र में रहने वालों के लिए सदा त्रासदी बनी रहेगी । न जाने कितने ही हृदय उस समय इस ऐतिहासिक घटना पर कांपे होंगे। आज भी इस घटना को सुनकर रौंगटे खड़े हो जाते हैं। मानवता जगत् में ऐसे ही कष्ट सहती रहेगी, शायद इस बात पर प्रश्न- चिन्ह लगाने की आवश्यकता है।

भले किसी भी भांति सही, परंतु आज असंख्य कदम पुनः भक्तिवाद की ओर झुक रहे हैं। यह कदाचित् पाप की गठरी का भरना भी हो सकता है। 'साका सरहिंद' जैसी ऐतिहासिक घटनाएं मानव को करुणा के पथ पर अग्रसर होने के लिए बाध्य करती रहेंगी, मानवोचित भावनाएं भरने के लिए प्रेरित करती रहेंगी।

मानवता को जागृत कर जन-जन के हृदय में करुणा की लहर को स्थापित करने वाले निरीह साहिबज़ादों-- बाबा ज़ोरावर सिंघ जी तथा बाबा फतहि सिंघ जी अपने गुरु-पिता के गुणों का अनुसरण करते हुए मानवता की नींव में ऐसा बीजारोपित कर गए जिसका फल हम आधुनिक युग में चख रहे हैं। मानवता के पुनरुत्थान के लिए आज के युग में किए जाने वाले प्रयास की भूमिका के रूप में इतिहास की विधियां मार्गदर्शक बनकर हमारा पथ प्रदर्शित करती हुई अंधकार से उजाले तक ले जाने का सोपान हैं। इतिहास में घटी इन घटनाओं से प्रेरणा लेकर सत्योमुखी होकर धर्म के प्रति निष्ठा का मार्ग चुनते हुए सही तथा गलत के प्रति नीर-क्षीर-विवेक रखकर आज हम उस दिशा की ओर चलें जो मानवता की दिशा है, उन शहादतों को सार्थकता प्रदान करें जो जन-जन के लिए कल्याणकारी हैं, तभी इन सपूतों को सही अर्थ में श्रद्धांजलि दी जा सकती है :

जगत् आलोकित करने आए,
वीर सपूत दशम पिता के ।
शहादत को शतशत नमन् है,
महकें फूल सदा चिता के।
जन-जन में भर कर श्रद्धा,
वे प्रेम का नीर बहाने आए।
सिंचित करने मानवता जग में,
होकर शहीद वे सबको हंसाने आए।

शहादत का स्रोत

-स. गुरचरनजीत सिंघ (लांबा) *

रिहा गिट्टां नाल पुत्तां दीआं मिणे पिन्नीआं
चोजी अक्खां साहवें नक्शा दीवार दा रिहा।
(कुंदन)

कलगीधर पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के लख़ते-जिगर चार साहिबज़ादों की शहादत मानवता के इतिहास में अद्वितीय है। संसार के किसी हिस्से में इसका कोई सानी नहीं मिलता। बड़े साहिबज़ादों का चमकौर साहिब के मैदाने-जंग में दस लाख की फ़ौज के साथ लोहा लेते हुए शहीद हो जाना और छोटे साहिबज़ादों का सरहिंद में दीवार में ज़िंदा चिने जाना, पत्थरों का सीना फाड़ देने वाली घटनाएं हैं।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को एक बार सिक्खों ने पूछा था कि ''सच्चे पातशाह! आप स्वयं ही तो कहते हो कि पूजा का धान (धन-पदार्थ) खाना ज़हर के समान है, फिर भी आप क्यों भेंट-पदार्थ लेते हो!'' सतिगुरु जी ने कहा कि ''आपको दान लेने का सही अर्थ जानने की ज़रूरत है। एक अमानती (बैंकर) के पास जब कोई अपनी अमानत संचित करता है तो वह न केवल उसका मूल ही लौटाता है बल्कि उसमें ब्याज जोड़ कर उसे लाभ भी देता है। मैं स्पष्ट रूप से अवश्य भेंट-स्वीकार करता हूं, मगर आप देखेंगे कि मैं इसमें अपना सब कुछ, मिला कर, अपना तन-मन-धन मिला कर, यहां तक कि अपना आप और अपना पूरा परिवार कुर्बान कर ख़ालसे को वापस लौटाऊंगा।'' क्या संसार में कोई इस प्रकार का सम्पूर्ण दानी परिवार हुआ है कि उसके पास अपना कुछ भी शेष न बचा हो। और तो और सतिगुरु जी ने 'वाहिगुरु जी का खालसा। वाहिगुरु जी की फ़तह।' कह कर ख़ालसे की सृजना की। इसमें 'खालसा' जो है वो 'वाहिगुरु' है और 'फ़तह' भी 'वाहिगुरु' की है। पूरा परिवार दानी-गुरु ने ख़ालसे में समाहित कर दिया :

सरहंद 'चों सुनेहा मिलिआ कि लाल टुर गए।
दोवें शहीद हो गए ने, नौनिहाल टुर गए।
सूबे ने कंध अंदर दोवें नपीढ़ दित्ते।
कोमल सरीर इट्टां दे विच्च पीड़ दित्ते।
सुन के इह गल्ल सारी उह मुस्करा के उठिआ।
उस बादशाह ने नूरे दे कोल आ के पुच्छिआ।
तूं रूबरू सैं उथे कोई कहर न कमाईं!

*Santsipahi@gmail.com Ph: +1 973 699 0950

ते साफ-साफ दस्सीं कोई गल्ल न लुकाईं !
तेसी दी लग्गी जद सट्ट सी करारी !
मेरे फतहि ने उच्ची कोई चीख ते न मारी?
कोई सी ते न कीती, कोई आह ते न कढ्ढी?
लालां ने किधरे उच्ची, कोई साह ते न कढ्ढी?
इह कहिण दा वी अन्दाज वक्खरा सी।
जो ओस ने वजाया उह साज़ वक्खरा सी।

बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतहि सिंघ जी ने जब सरहिन्द के सूबेदार की कचहरी में पेश होना था तो बड़े दरवाज़े में एक छोटी खिड़की रखी गई, ताकि इस ढंग के साथ साहिबज़ादे सिर झुका कर प्रवेश करें, मगर "ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ।।जिन कै रामु वसै मन माहि ।।" ये तो कलगीधर पिता के सुपुत्र, श्री गुरु तेग़ बहादर जी के पोते और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के पड़पोते थे। ये तो श्री गुरु अरजन देव जी से आरंभ हुई शहादत-शृंखला की एक अहम कड़ी थे। पंथक कवि स. तेजा सिंघ 'साबर' ने इसकी पहेलीनुमा तसवीर इस प्रकार अंकित की है :

सुरगां दे विच बैठीआं है सन,
इक जग्हा सरकारां दो।
वेखण वाले वेख रहे ने,
बुत ए इक, नुहारां दो।
गल्लां विचों गल्ल इह निकली,
गल्ल ए इक, विचारां दो।
इक ने पंचम पिता प्यारे,
इक उहनां दे पोते जो।
उस पोते ने पोते लै लए,
दो एधर ते ओधर दो।

चढ़दी कला (बुलंदावस्था) के इस शिखर का स्रोत क्या है, यह विचारणीय तथ्य है। साहिबज़ादे यह महान कार्य कैसे कर पाए, इसकी तैयारी श्री गुरु नानक देव जी ने की। श्री गुरु नानक देव जी जब सुलतानपुर लोधी के नवाब के दरबार में आए तो गुरु साहिब ने नवाब को झुक कर सलाम नहीं किया। उपस्थित मंत्री ने जब सतिगुरु जी को सलाम करने के लिए कहा तो हजूर ने कहा कि "जिस मनुष्य के अंदर लालच होगा उसकी गर्दन झुकेगी, जिसको लालच नहीं है उसकी गर्दन हमेशा बुलंद रहेगी।" "आ तमां बूद सलाम मी करद, गर्दन बे तमां बुलंद बवद।" यह रूहानी शिक्षा है जो सतिगुरु जी ने पूरी मानवता के लिए प्रदान की। सतिगुरु श्री गुरु नानक देव जी आह्वान किया— "जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ।। सिरु धरि तली गली मेरी आउ।।" साहिबज़ादों के दादा श्री गुरु तेग बहादर साहिब और उनके दादा श्री गुरु अरजन देव जी ने इस शमा को और रौशन किया :

शमा भी कम नहीं कुछ इश्क में परवाने से,
जान देता है अगर वो, तो यह सर देती है।

(जौक)

इस मार्ग के मार्गी बन कर साहिबज़ादे भी 'वीर' या 'बाल वीर' नहीं, बल्कि बाबा अजीत सिंघ जी, बाबा जुझार सिंघ जी, बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतहि सिंघ जी हो गए। सरहिंद के बारे में कहा गया :

नेकी वो शै है जो कभी लुट नहीं सकती।
सरहिन्द तो लुट सकती है,
यह कभी लुट नहीं सकती।

यह भी वास्तविकता है कि उसी सरहिन्द में सिंघों ने गधों द्वारा हल जोते। माता, पिता, चारों साहिबज़ादे कुर्बान करने के बावजूद भी कलगीधर पिता ने औरंगजेब को (ज़फ़रनामा भेज कर) हिला कर रख दिया कि क्या हुआ यदि तूने मेरे चारों साहिबज़ादे शहीद कर दिए हैं, अभी तो कुंडलीदार साँप (मार) बाकी है, जिंदा है :

चिहा शुद कि चूं बच्चगां कुशतह चार।।
कि बाकी बिमांदअसतु पेचीदह मार।।७८।।

सूबे की कचहरी में दीवान सुच्चा नंद ने साहिबज़ादों के बारे में कहा कि "ये तो साँप (भुजंग/भुजंगम) के बच्चे हैं।" उस दिन के बाद हर सिक्ख कलगीधर पिता की नादी संतान होने के कारण 'भुजंगी' कहा जाने लगा। यह चढ़दी कला का सफ़र था।

इतना ही नहीं, सब कुछ कुर्बान करने के उपरांत भी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने औरंगजेब को लानत देते हुए कि जो मनुष्य हुमा (एक कल्पित पक्षी, जिसके बारे में मान्यता है कि यह पक्षी जिसके सिर पर से गुजर जाता है, वो राजा बन जाता है।) अर्थात् अकाल पुरख के साये में आ जाए, उसका (तेरे जैसे) कौए क्या बिगाड़ सकते हैं!

इसके बाद का सारा सिक्ख इतिहास चढ़दी कला की इसी बुनियाद पर सृजित किया गया। प्रत्येक सिक्ख दैनिक अरदास में इन शहादतों को याद करता है। यह एक ऐसा स्रोत हो जो ख़ालसे को हमेशा चट्टान के साथ टकराने, स्वयं को कुर्बान करने और लोक-कल्याण के लिए तत्पर रहने की प्रेरणा देता रहा है व देता रहेगा। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त भी कह उठे :

जिस कुल, जाति, देश के बच्चे,
दे सकते हैं यूं बलिदान।
उसका वर्तमान कुछ भी हो,
भविष्य है महा महान।

चमकौर-युद्ध के महान् शहीद : भाई संगत सिंघ जी

*-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल**

दशमेश पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सन् १६९९ ई० की बैसाखी के दिन जब श्री अनंदपुर साहिब में खालसा पंथ की सर्जना की थी तब उन्होंने सिक्खों से शीश की माँग की थी। जिन सिक्खों ने गुरु को शीश अर्पित किया वे गुरु-कृपा रूपी 'अमृत' छक कर सिंघ सज गये । इस प्रकार गुरु जी ने सिक्खों में शहादत का ऐसा चाव भर दिया कि ज़रूरत पड़ने पर ये आगे रहकर शहादतें दे सकें। गुरु के दर्शाये मार्ग पर चलकर अनगिनत सिक्खों ने कुर्बानियाँ दीं। ऐसे योद्धा सिंघों में से एक थे— भाई संगत सिंघ जी।

शहीद भाई संगत सिंघ जी वे महान् योद्धा थे जो चमकौर के युद्ध में शहीद हुए थे। अपना शीश कुर्बान किया था।

जीवन-परिचय : भाई संगत सिंघ जी आयु, चेहरे-मोहरे एवं डील-डौल में लगभग दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जैसे ही दिखते थे। आपके जन्म-स्थान के विषय में दो मत प्रचलित हैं। एक मत के अनुसार आप रोपड़ ज़िले के गाँव कट्टा (सबौर) के रहने वाले थे। इस स्थान पर आपकी यादगार बनी हुई है। दूसरे मत के अनुसार आप फगवाड़ा के निकट नंगल-सपरोड़ गाँव के निवासी थे। यहाँ एक टीले के ऊपर आपकी याद में एक गुरुद्वारा सुशोभित है। भाई संगत सिंघ जी बचपन से ही गुरु-घर की सेवा में रत थे। सिक्ख इतिहास में आपका जिक्र दशमेश पिता के पुराने सेवक के रूप में हुआ है।

चमकौर के युद्ध में शहादत : श्री अनंदपुर साहिब के घेरे के समय, दिसंबर १७०४ ई. में जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने परिवार एवं कुछ सिक्खों सहित श्री अनंदपुर साहिब छोड़ा तो भाई संगत सिंघ जी गुरु जी के साथ थे। सरसा नदी पर हुई झड़प और परिवार-विछोड़े के बाद गुरु जी जिन चालीस सिक्खों सहित चमकौर की गढ़ी में पहुँचे, उनमें भाई संगत सिंघ जी शामिल थे।

२२ दिसंबर, सन् १७०४ ई० को सारा दिन चमकौर का युद्ध होता रहा। गुरु जी ४० सिक्खों के साथ गढ़ी में थे और गढ़ी के इर्द-

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना, फोन : ६२३९६-०१६४१*

गिर्द मुगलों एवं पहाड़ी राजाओं के दस लाख के लश्कर ने घेरा डाल रखा था। दिन भर के जबरदस्त युद्ध में दोनों बड़े साहिबज़ादे, दो 'पांच प्यारे' और अधिकांश सिक्ख शहीद हो चुके थे। ऐसे में बचे हुए सारे सिक्खों ने गुरु साहिब से प्रार्थना की कि वे पंथ का नेतृत्व करने के लिए गढ़ी छोड़कर चले जायें। तब तक वे मुगल लश्कर के विरुद्ध जूझकर उसे यहीं रोके रखेंगे। गुरु जी शत्रु से निर्णायक युद्ध करके शहीद होने के अपने फैसले पर अटल थे। तभी वहाँ उपस्थित सिक्खों में से पाँच सिक्खों ने 'पांच प्यारों' का रूप धारण कर गुरु जी को आदेश दिया कि पंथ को उनकी भविष्य में भी आवश्यकता है, अत: वे गढ़ी छोड़कर चले जायें । गुरु दशमेश पिता पंथ एवं पाँच सिक्खों के हुक्म का उल्लंघन न कर सके । आप भाई दया सिंघ जी, भाई धरम सिंघ जी, एवं भाई मान सिंघ जी के साथ जाने को तैयार हो गये।

गढ़ी में से जाने से पूर्व दशमेश पिता ने अपने जैसे चेहरे-मोहरे वाले भाई संगत सिंघ जी को बुलाया और अपनी दस्तार, कलगी अपने सिर से उतार कर भाई जी के सिर पर सजा दी। अपनी पोशाक एवं शस्त्र भी धारण करा दिये। गुरु जी के जाने के पश्चात् गढ़ी में भाई संगत सिंघ जी और छः सिक्ख— भाई किहर सिंघ जी, भाई संतोख सिंघ जी, भाई देवा सिंघ जी, भाई राम सिंघ जी, भाई जीवन सिंघ जी एवं भाई लद्धा सिंघ जी शेष बचे थे।

२३ दिसंबर को हुए भयानक युद्ध में ये सातों सिक्ख अनगिनत शत्रुओं को मौत के घाट उतार कर शहीद हो गये। शहीद हुए भाई संगत सिंघ जी को मुगल फौज ने गुरु जी समझा और उनका शीश काटकर सरहिंद के सूबेदार वज़ीर खान के सामने पेश किया। शत्रु लम्बे समय तक इसी भ्रम में रहा कि उसने गुरु जी को शहीद कर दिया है। इस कारण गुरु जी को सुरक्षित स्थान तक पहुँचने का समय मिल गया ।

इस प्रकार भाई संगत सिंघ जी वे महान् शहीद हैं, जिन्होंने गुरु जी से अति स्नेह प्राप्त कर चमकौर के युद्ध में आततायियों के दाँत खट्टे करते हुए शहीदी प्राप्त की।

बाबा गुरबखश सिंघ जी शहीद

*-स. मोहन सिंघ उरलाणा**

जन्म : मिसल काल के दौरान लोभ-रहित, गरीब-पालक, सत्य पर पहरा देने और हमेशा अकाल-अकाल जपने वाली पंथ की जुझारू (वीर) जत्थेबंदी— निहंग सिंघ दल के बहादुर योद्धा, पंथ-सेवक प्रत्येक जंग में प्रथम कतार में खड़े होकर लड़ने वाले निहंग बाबा गुरबखश सिंघ जी का जन्म १० अप्रैल, १६८८ ई. को भाई दसौंधा जी और बीबी लच्छमी जी के घर गाँव लील में हुआ[१] :

खेमकरन ढिग लील[२] सु नाम।
हुतो माझै मैं तिस को ग्राम।।[३]

आप जी के माता-पिता सन् १६९३ ई. में श्री अनंदपुर साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबार में चले आए[४] और वहीं पर दोनों का देहांत हुआ।[५]

शास्त व शस्त्र-विद्या : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की आज्ञा का पालन करते हुए भाई मनी सिंघ जी ने भुझंगी गुरबखश सिंघ जी को गुरबाणी का शुद्ध उच्चारण और अर्थ-ज्ञान सिखाया जिसके बारे में वर्णन इस प्रकार है :

श्री गुरु की आज्ञा मानी,
मनी सिंघ गुण धाम।
श्री गुरबखश मृगेस प्रति,
कहे अर्थ अभिराम।।५।।[६]

दसम पातशाह जी ने भुझंगी सिंघ को शस्त्र-विद्या का प्रशिक्षण अपनी देख-रेख में दिलवाया। अमृत के दाते श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जब खालसा पंथ की सर्जना की तो उसके बाद अमृत-प्रचार (संचार) की मुहिम चलाई गई। भुझंगी सिंघ ने भाई मनी सिंघ जी के जत्थे से अमृत की दात प्राप्त की :

भए जु शहीद मनी सिंघ भाई।
उन्है हाथ थी पाहुल पिलाई।।...१०।।[७]

आप जी ने शास्त्र और शस्त्र-विद्या में पूर्ण महारत हासिल कर ली और गुरु-काल से लेकर मिसल काल तक एक बहादुर सिंघ की भांति सभी जंगों में बढ़-चढ़ कर पूरी बहादुरी व जोश के साथ अपना योगदान दिया।

नित्य कर्म : आप जी अमृत बेला में सवा पहर रात शेष रहते ठंडे जल से स्नान करते। नितनेम की बाणी के साथ अकाल उसतत, चंडी की वार, शसत्रनाममाला आदि का पाठ भी करते। दोनों वक्त गुरु-दरबार में उपस्थित होते और सदा अकाल-अकाल जपते रहते। गुरु जी पर पूर्ण भरोसा रखते। शरीर पर नीली पोशाक धारण करते। पुरातन मर्यादा के अनुसार खड़े होकर दसतार सजाते। दसतार पर सर्वलोह के चक्कर, खंडे आदि सजाते।

*एल-६/९०५, गली नं. ३/४, न्यू शहीद ऊधम सिंघ नगर, श्री अमृतसर साहिब— १४३००६, फोन : ९७७९६-०८०५०

गातरे और कमर पर दुधारा खंडा, कटार, पिस्तौल आदि धारण करते। शस्त्रों की पूजा करने के बाद जब भी शस्त्रों के दर्शन करते, उन्हें पकड़ते या रखते, तो उन्हें नमस्कार अवश्य करते :

जिते शसत्र नामं ।।
नमसकार तामं ।।...९१ ।।[८]

सदा चढ़दी कला (उत्साह) में रहते।

पंथ के अगुआ जत्थेदार : आप सदा नाम-बाणी में रंगे रहते। जब भी पंथ पर कोई विपदा आती तो आप जी सबसे अग्रणी होकर डट जाते। युद्ध के क्षेत्र में मरने से न डरते और युद्ध-भूमि से मुँह न मोड़ते। जब खालसा कूच करता तो आप जी का डेरा निशान साहिब की छत्र-छाया में सबसे पहले चलता और बाकी के सभी आप जी के पीछे चलते। कूच करने के साथ-साथ नगाड़े पर चोट मारते हुए दल खालसा आगे बढ़ता जाता। जिस जगह पर निशान साहिब टिका कर रुकते, सभी जत्थे आप जी के पीछे वहीं पर पड़ाव करते।

बदलते समीकरण : दुश्मन द्वारा हर हमले का पंथ ने डट कर मुकाबला किया और जान की परवाह न करते हुए सदा चढ़दी कला में रहते। अहमद शाह अब्दाली के छठे हमले के बाद ख़ालसे ने पूरे पंजाब पर कब्ज़ा कर लिया और जहान ख़ान तथा अब्दाली के चाचा सरबुलंद ख़ान को करारी हार दी। जब चाचा ने काबुल जाकर भतीजे को शर्मसार पराजय की ख़बर सुनाई तो वह आग बबूला हो गया और उसने हिंद पर सातवां हमला करने की तैयारी की।

सिंघ पंजाब से बाहर : भरतपुरिए जाट राजा सूरज मल्ल ने आगरा के किले पर कब्ज़ा कर वहाँ का सारा ख़ज़ाना लूट लिया तो दिल्ली के हाकिम नजीब ख़ान रुहेले ने उसे लड़ाई में मार मुकाया। अपने बाप का बदला लेने के लिए उसके पुत्र जवाहर मल्ल ने सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया की मदद से दिल्ली के किले के अंदर रुहेले को घेर लिया। यह ख़बर जब अहमद शाह अब्दाली को मिली तो इस खबर ने जलती आग पर तेल का काम किया, क्योंकि अब्दाली अपने चाचा बुलन्दे से खबर सुन कर पहले से ही परेशान था। वो अपनी १८ हज़ार गिलजई फ़ौज लेकर पंजाब की तरफ आया। कलात का हाकिम नसीर ख़ान १२ हज़ार बलोचियों सहित उसके साथ आ मिला।

अब्दाली पंजाब में : सन् १७६५ ईस्वी के आखिर में अब्दाली ने पंजाब पर धावा बोला तो ख़ालसे ने अपने ठिकानों से किनारा किया। यह हिंद पर उसका सातवां हमला था। गृहस्थी सिंघों पर ज़ुल्म ढहाकर उनका कत्ल किया गया। पंजाब की जनता को लूटा गया। मीर अब्दुल नबी राय सानी, मीर नसीर ख़ान और अहमद ख़ान बुलंदी ने अब्दाली का साथ दिया। सरदार चढ़त सिंघ के साथ हुए मुकाबले में अहमद ख़ान बुलंदी और उसके पुत्र मारे गए। सिक्ख की गोली लगने से मीर

नासिर ख़ान का घोड़ा मर गया, परन्तु वो खुद बच गया। फिर सरदार चढ़त सिंघ यहाँ से चले गए।

श्री हरिमंदर साहिब का पुनर्निर्माण : अहमद शाह अब्दाली द्वारा सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर साहिब को सन् १७५७ ई. में गिरा कर सरोवर को पाट दिया गया था। कुछ अरसे बाद सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया और अन्य सिक्ख नेताओं ने मिल कर श्री हरिमंदर साहिब का पुनर्निर्माण आरंभ किया। सभी ने अपनी समर्थता के अनुसार धन का योगदान दिया। इकट्ठी हुई धनराशि भाई देस राज जी सुरसिंघ वालों के हवाले की, जिन्होंने थोड़े समय में ही गुरु-दरबार का निर्माण और सरोवर की कार-सेवा करवा कर पूर्ववत् तैयार कर दिया।

सन्नद्धबद्ध होकर माथा टेका : बाबा गुरबखश सिंघ जी ने शहीद होने के लिए केसरी पोशाक पहनी। शीश पर सुच्ची पगड़ी सजा कर ऊपर फरहरा लहराया। दुमाले (दोहरी दसतार) पर शस्त्रों को बांधने के लिए लोहे की तारों की कसी हुई रस्सियाँ इस्तेमाल कीं। शरीर पर बख़्तर पहन कर कमर पर पेटी कसी। उस पर कमरकस्सा (कमरबंद) लगा कर गोली-सिक्का आदि लटकाया। दोनों कंधों में दस-दस चक्कर पहने। टकुआ, लोहे का डंडा, ख़ंजर और पिस्तौल भी कमरकस्से में धारण किये। कमर पर लोहा-ढाल लटकायी। गातरे में दोधारा खंडा धारण किया। पूरी तरह से सन्नद्धबद्ध होकर अकाल बुंगा (श्री अकाल तख़्त साहिब) पर आ उपस्थित हुए। पाँच थाल कड़ाह प्रशाद तथा अन्य वस्तुएं भेंट की :

धरि पाँच थाल कड़ाह के,
किछु भेट और चड़ाइ।. . .
इक सेहरा सुच तखत तरफों
सिंघ ग्रंथी लजाइ।
गुरबखश सिंघ शहीद के,
सो दयो सीस झुलाइ ।।४२।।

ग्रंथी जी ने तख़्त साहिब की तरफ से एक सेहरा लाकर जत्थेदार बाबा गुरबखश सिंघ जी के शीश पर झुलाया। बाबा जी ने साथी सिंघों को साथ लेकर सात थाल कड़ाह प्रशाद के अलावा अपने पास जो कुछ भी था, श्री हरिमंदर साहिब में माथा टेक कर अर्पित किया और बहुत-से फूलों की गुरु-दरबार में बरखा की। अरदास करवा कर कड़ाह प्रसाद की देग का प्रशाद बाँटा गया :

फिर जाइ करि दरबार मैं,
सरबंस भेंट चढाइ।
सत थाल धर परशाद के,
बहु सुमनि बरखा कीन।
करवाइ केअरदास पुन,
वरताइ कुणका दीन ।।४५।।[१०]

इसके पश्चात् बाबा जी ने समूह सिंघों के लिए श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के हजूर खड़े होकर अरदास की :

दोहरा : हरिमंदर के हजूर इम

खड़ कर करी अरदास।
सतिगुर सिखी संग निभै
सीस केसन केसास।।४२।।[११]

दोनों दलों की तैयारी : अहमद शाह अब्दाली के नेतृत्व में लड़ने वाली ३० हज़ार फ़ौज घोड़ों पर सवार थी। पूरी फौज ने अपने शरीर कवच पहना हुआ था और सिर पर लोह टोप था। उनके पास दूर तक मार करने वाले तीर, बंदूकें आदि हथियार थे। इस तरफ मात्र ३० सिंघ थे और इनके पास कोई बख़तर आदि भी नहीं था। इनके पास चाकू, कटार, तेग, खंडा, नेजा आदि थे, मगर सिंघ मरते दम तक लड़ने को तत्पर थे। अफगानियों को अपने बढ़िया हथियारों का अभिमान था और सिंघों को अपने रिवायती शस्त्रों एवं गुरु पर पूर्ण विश्वास था।

दोनों दलों की मुठभेड़ : सिंघ बड़ी बेसब्री के साथ गिलजइयों का इन्तज़ार कर रहे थे।[४] दिसंबर, १७६५ ई. को सूर्योदय होते ही हमलावर श्री हरिमंदर साहिब पहुँच गए और गुरु की लाडली निहंग सिंघ फौज सामने आकर डट गई। सिंघों ने चारों ओर से घेर कर शत्रु दल का खूब मर्दन किया। बाबा जी अकाल बुंगे से सिंघों का उत्साहवर्धन कर रहे थे और दुश्मन 'बिज़न बिज़न' (मारो! मारो!) कह रहा था। सिंघों के जोश ने दुश्मनों को होश भुला दी। अफगानियों ने चारों तरफ से घेरा डाल कर बंदूकों का इस्तेमाल करते हुए सिंघों को शहीद करना शुरू कर दिया। सभी सिंघ शहीद हो गए।

बाबा जी की शहादत : जब बाबा जी ने सभी सिंघों को शहीद हुए देखा तो आप जी अकाल बुंगे से नीचे उतर कर दुश्मनों के सामने आ डटे। दुधारे खंडे से शत्रु को बख़तर सहित चीरने लगे। आप जी आगे बढ़ते गए और दुश्मनों की लाशों के ढेर लगाते गए। अफगानी ढाल का सहारा लेकर लड़ रहे थे, जबकि आप जी ने अपने बचाव के लिए किसी ढाल का सहारा नहीं लिया। आप मुँह मोड़ कर नहीं, बल्कि सामने होकर लड़ रहे थे। जब गिलजइयों की कोई पेश न गई तो वे दूर जाकर तीरों और बंदूकों के साथ बाबा जी पर वार करने लगे। दुश्मन का नज़दीक होकर लड़ाई करने का हौसला पस्त हो गया। बाबा जी का शरीर गोलियों व तीरों से बेंधा गया। शरीर में से लहू की धारा ऐसे बहने लगी जैसे कोहलू में से तेल की धारा बहती हो। आप पीछे नहीं मुड़े कि कहीं कोई शत्रु पीठ पर वार न कर दे। शत्रु के वार अपने सीने पर सहे। जब शरीर निढाल हो गया तो आप जी ने शत्रु को ललकारा कि पास आकर लड़ो! शत्रु-दल ने आप जी के सिर को दबाया तो आप जी घुटनों के बल हो गए मगर अपने हाथों से खंडा नहीं छोड़ा। फिर शत्रु सेना ने तलवार के वार से बाबा जी का शीश धड़ से अलग कर दिया। आप जी शहीद तो हो गए परन्तु हाथ से खंडा नहीं छोड़ा।

प्रभु ने सिंघ जी का किया प्रण स्वयं पूरा

किया। उनका जीना और मरना धन्य हो गया :

गिलज़न तेग़ ग्रीव पै डारी।
भई मुंडी तब धड़ ते न्यारी।
सिंघ को प्रण पूरो प्रभ कीओ।
धंन मरन उस धंन है जीओ।।८५।।[१२]

सिंघों का संस्कार : जब अफगानी गुरु की नगरी छोड़ गए तो सिंघों ने शहीद सिंघों के शरीर को एक जगह इकट्ठा कर, चिता तैयार कर, सभी के शरीर का एक ही अंगीठे में श्री अकाल तख़्त साहिब की पिछली तरफ दाह-संस्कार किया। फिर कड़ाह प्रशाद बाँटा गया :

दोहरा : *इक चिखा पै सभ धरे दीन हुतासन लाइ।*
करयो कड़ाह सु तहिं हुतो सभ ही दयो वरताइ।।१०१।।[१३]

आप जी के बाद भाई सूरत सिंघ जी ने दमदमी टकसाल का कार्य-भार संभाला।

शहीदगंज : फिर सिंघों का 'शहीदगंज' बनवाया। जब श्री दरबार साहिब के निकट घर और बाज़ार बने तो यह स्थान एक गली में आ गया। जून, १९८४ ई. के घल्लूघारे के बाद श्री दरबार साहिब परिसर के गिर्द गलियारा बनाया गया। जब श्री दरबार साहिब परिसर के गिर्द गलियारा बनाया गया तो यह यादगर श्री दरबार साहिब की परिक्रमा में गई। नवनिर्माण के वक्त 'शहीदगंज' की इमारत भी नई बनाई गई है, जहाँ सिंघों का शहीदी दिवस हर बरस ९ मार्गशीर्ष को मनाया जाता है।

बाबा जी की याद में बने स्थान : १५ अगस्त, १९४७ ई. में देश-विभाजन के कारण नये बने देश पाकिस्तान में बाबा जी का जन्म-नगर लील रह गया और वहाँ से उठ कर सिक्ख भारतीय पंजाब में आ बसे। बाबा जी की याद में निम्नलिखित गाँवों में गुरुद्वारा साहिबान बनाए गए हैं जिनकी जानकारी हमें स. सुखदेव सिंघ भूरा कोहना, पूर्व सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक ने दी है। विवरण इस प्रकार है :-

१. जिला तरनतारन की तहसील पट्टी के अधीन गाँव दराज के तथा अलगो कोठी।

२. जिला पटियाला की तहसील पातड़ां के गाँव कंगथला में बाबा जी की यादगार सुशोभित है।

हवाला-सूची :

१. सिक्ख पंथ विश्व कोश : डॉ. रतन सिंघ (जग्गी), भाग २, पृष्ठ ७०९
२. स. सुखदेव सिंघ भूरा कोहना (पूर्व सचिव, शि. गु. प्र. कमेटी) के अनुसार यह नगर अब पाकिस्तान में स्थित है।
३. श्री गुरु पंथ प्रकाश, स. रतन सिंघ (भंगू) संपादक स. जीत सिंघ शीतल, पृष्ठ ५१४
४. सिक्ख पंथ विश्व कोश, डॉ. रतन सिंघ (जग्गी), भाग २, पृष्ठ ७०९
५. इतिहास दमदमी टकसाल : महिता, पृष्ठ ५३
६. भाई साहिब चन्द्रका, पृष्ठ १, सुनहरी इतिहास, पृष्ठ १९७
७. श्री गुरु पंथ प्रकाश, भंगू, शीतल, पृष्ठ ५१४
८. बचित्र नाटक, अध्याय १
९. श्री गुरु पंथ प्रकाश, ज्ञानी गिआन सिंघ, भाग-५, उतरार्ध बिस्राम ५०, पृष्ठ २४५८
१०. श्री गुरु पंथ प्रकाश, भाग-५, उतरार्ध बिस्राम ५०, पृष्ठ २४५९
११. श्री गुरु पंथ प्रकाश, भंगू, डॉ. बलवंत सिंघ (ढिल्लों), पृष्ठ ३९२
१२. श्री गुरु पंथ प्रकाश, भंगू, (ढिल्लों), साखी १५२, पृष्ठ ३८९
१३. श्री गुरु पंथ प्रकाश, भंगू, (ढिल्लों),- पृष्ठ ३९३

आलौकिक आनंद का सागर : श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी

-डॉ. मनजीत कौर*

मानवतावादी दृष्टिकोण, विश्व-शांति एवं आध्यात्मिकता के परम उद्देश्य से विरचित श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना का पुनीत कार्य बहुमुखी प्रतिभा के धनी, शांति के पुंज, पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी ने किया, जो श्री गुरु तेग बहादर साहिब के पितामह (दादा जी) थे। दशम गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने नवम् गुरु की बाणी को तलवंडी साबो में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज किया। इस प्रकार वर्तमान में यह पावन ग्रंथ १४३० पन्नों में, ३१ रागों की मधुर झंकार में गुथित महापुरुषों की रूहानी बाणी से सुशोभित है। इसमें श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी के मुखारबिंद से उच्चारण किए गए ५९ शबद (पद) तथा ५७ सलोक (श्लोक) अंकित हैं। गुरु जी द्वारा उच्चरित पावन सलोक श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सम्पूर्ण पाठ की सम्पूर्णता पर अतीव वैराग्य एवं अनुरागमयी शैली में गायन किये जाते हैं।

इन सलोकों को श्रद्धा-भावना से पढ़ने अथवा सुनने वाला कोई भी व्यक्ति उस समय पूर्ण तल्लीनता के साथ संसार की नश्वरता को समझते हुए अकाल पुरख वाहिगुरु से मिलाप की तीव्र इच्छा प्रकट किए बिना नहीं रह सकता, क्योंकि गुरु जी की आलौकिक बाणी आनंद-प्रदायिनी तथा तपित हृदयों को असीम शांति प्रदान कर जीवन मनोरथ से रू-ब-रू करवाने में पूर्णतया सक्षम है।

गुरु जी द्वारा उच्चारण किए गए ५९ शबद १५ रागों में उच्चरित हैं और ५७ सलोक 'सलोक महला ९' प्रकरण से विरचित हैं। गुरु जी की बाणी का विवरण इस प्रकार अंकित है :—

क्रमांक	रागु	शबद	पन्ना संख्या
१.	गउड़ी	९	२१९-२२०
२.	आसा	१	४११
३.	देवगंधारी	३	५३६
४.	बिहागड़ा	१	५३७
५.	सोरठि	१२	६३१-६३४
६.	धनासरी	४	६८४-६८५

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९१२९७-६२५२३

७.	जैतसरी	३	७०२-७०३
८.	टोडी	१	७१८
९.	तिलंग	३	७२६-७२७
१०.	बिलावलु	३	८३०-८३१
११.	रामकली	३	९०१-९०२
१२.	मारू	३	१००८
१३.	बसंतु	५	११८६-११८७
१४.	सारंग	४	१२३१-१२३२
१५.	जैजावंती	४	१३५२-१३५३
	योग	५९	
	सलोक	५७	१४२६-१४२९
	कुल योग	११६	

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के कुल ३१ रागों में से जैजावंती राग में केवल श्री गुरु तेग बहादर साहिब की ही बाणी विरचित है।

गुरु जी की समूची बाणी अनुराग, त्याग और वैराग्य की त्रिवेणी है। गुरु जी की भाषा सरल, सहज होते हुए मुहावरों एवं लोकोक्तियों से सुसज्जित है, जो सहजता से हृदय में उतर कर अन्त:करण को रूपान्तरित करती हुई जीवन के परम उद्देश्य का बोध करवाने में पूर्णत: सक्षम है। शब्द-चयन कमाल का है। भक्ति साहित्य में आप उच्च कोटि के बाणीकार हैं। चिन्तकों ने भक्ति साहित्य के समस्त साहित्यकारों में आपकी बाणी को बेजोड़ और अतुलनीय माना है। आप जी द्वारा उच्चारित किए गए सलोक इतने प्रभावी हैं कि श्रोता अथवा पाठक वैराग्य-भावना से निमग्न हो जाता है। गुरु जी की बाणी पाषाण हृदय को मोम बनाने वाली तथा नास्तिक व्यक्ति को भी आस्तिक बनाने की क्षमता रखती है। ईश्वर-नाम-सुमिरन की महिमा का बारम्बार गायन, अनेक पौराणिक कथाओं एवं घटनाओं का संकेत करते हुए उन्हें दृष्टांत रूप में प्रस्तुत कर उपमा, रूपक आदि अलंकारों से सुसज्जित आपकी अमृतमयी बाणी मानव हृदयों को द्रवित कर उन्हें सहज एवं गुणवत्ता भरपूर जीवन जीने की युक्ति सिखाती है, ईश्वर-प्राप्ति का मार्ग सुगम बनाते हुए नेक जीवन जीने को प्रोत्साहित करती है।

झूठ, कपट, निंदा, मोह-माया, स्वार्थ, पाखण्ड और अहंकार जैसे विकारों को त्याग कर सदैव ईश्वर और मृत्यु को याद रखने की

प्रेरणा तथा निर्भय स्वरूप रहते हुए दूसरों को भी निर्भयतापूर्वक जीवन जीने दो, की हिदायत करती गुरु जी की अनुपम बाणी ईश्वर-प्रदत्त बल का दुरुपयोग न करके उसका प्रयोग सही दिशा में करने वाले को सच्चा ज्ञानी पुरुष मानती है, यथा :

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ।।
कहु नानक सुनि रे मना
गिआनी ताहि बखानि ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२७)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी ईश्वर की शरण में आकर अनमोल जीवन को सफल बनाने हेतु प्रेरित करती है :

हरि जसु रे मना गाइ लै जो संगी है तेरो ।।
अउसरु बीतिओ जातु है
कहिओ मान लै मेरो ।। १ ।। रहाउ ।।
संपति रथ धन राज सिउ अति नेहु लगाइओ ।।
काल फास जब गलि परी
सभ भइओ पराइओ ।।१ ।।
जानि बूझ कै बावरे तै काजु बिगारिओ ।।
पाप करत सुकचिओ
नही नह गरबु निवारिओ ।।२ ।।
जिह बिधि गुर उपदेसिआ सो सुनु रे भाई ।।
नानक कहत पुकारि कै गहु प्रभ सरनाई ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७२७)

इस नश्वर शरीर ने आखिर मिट्टी में मिल जाना है, अत: सब प्रकार का अभिमान त्याग कर प्राणी-मात्र को प्रभु-सिमरन हेतु प्रेरित करते हुए, अज्ञानी मनुष्य की अन्तर्रात्मा को झकझोरते हुए गुरु जी प्रश्न करते हैं, हे मूढ़ प्राणी! तू धर्म-ग्रंथों को श्रवण करता है, लेकिन उसके मर्म को, गूढ़ रहस्य को क्यों नहीं समझता? मृत्यु तेरे समक्ष खड़ी है। तू अस्थिर शरीर को स्थिर क्यों मान बैठा है? तू प्रभु का सुमिरन कर बेशकीमती जीवन को सफल एवं सार्थक बना! जैजावंती राग में गुरु जी का पावन फरमान है :

बीत जैहै बीत जैहै जनमु अकाजु रे ।।
निसि दिनु सुनि कै पुरान
समझत नह रे अजान ।।
कालु तउ पहूचिओ
आनि कहा जैहै भाजि रे ।।१ ।। रहाउ ।।
असथिरु जो मानिओ देह
सो तउ तेरउ होइ है खेह ।।
किउ न हरि को नामु लेहि
मूरख निलाज रे ।।१ ।।
राम भगति हीए आनि
छाडि दे तै मन को मानु ।।
नानक जन इह बखानि जग महि बिराजु रे ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३५२)

संगीत की लहरियों एवं शांत रस से भरपूर प्रत्येक शबद हृदय को रूपान्तरित करता प्रतीत होता है। गूढ़ तथ्यों की सहज अभिव्यक्ति गुरु जी की बाणी में सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। अनुभूति एवं अभिव्यक्ति अर्थात् भाव एवं कला पक्ष का गुरु जी की

बाणी में मणिकांचन योग है।

गुरु जी की बाणी में बेशक वैराग्य-भाव ध्वनित होता है, लेकिन इसका अभिप्राय घर, परिवार, समाज का त्याग नहीं, अपितु उनके मोहपॉश की बेड़ियां न डाल कर सांसारिक असारता की यथार्थता को प्रकट करते हुए, जीवन के परम उद्देश्य को स्मृति-मण्डल में रखते हुए सदैव जीवन-लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत रहना है। इन बंधनों से मुक्ति गुरबाणी आशयानुसार प्रभु-नाम-सुमिरन से ही मुमकिन है।

इसी प्रकार गुरु जी द्वारा उच्चारण किए गए सलोकों में सांसारिक रिश्तों की स्वार्थ-परता की स्पष्ट तसवीर प्रस्तुत की गई है। एकमात्र ईश्वर को ही सच्चा साथी मानते हुए उसी से सच्ची प्रीति करने की प्रेरण दी गई है। वस्तुत: नाम रूपी अमृत द्वारा निर्मल आत्मिक स्वरूप की पहचान कर लेना ही प्रभु के मिलाप का आधार है। प्रथम सलोक में गुरु जी प्रभु-भक्ति के बिना जीवन को व्यर्थ बताते हुए अति सुंदर उदाहरण द्वारा प्रभु-भक्ति हेतु मानवता को प्रेरित करते हैं। प्रभु-सुमिरन के बिना बेशकीमती जीवन व्यर्थ गंवाने वाले को सम्बोधित करते हुए गुरु जी मछली का उदाहरण देकर सुंदर रूप में समझाते हैं कि जैसे मछली के जीवन का आधार जल है, ठीक वैसे ही मनुष्य के जीवन का आधार प्रभु-भक्ति होनी चाहिए :

गुन गोबिंद गाइओ नही
जनमु अकारथ कीनु।।
कहु नानक हरि भजु मना
जिह बिधि जल कउ मीनु।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२६)

यही नहीं, परमेश्वर के अनेक गुणों का वर्णन करते हुए गुरु जी ने ईश्वर को अपने अंग-संग प्रतीत करने हेतु प्रेरित किया है :

पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के नाथ।।
कहु नानक तिह जानीऐ
सदा बसतु तुम साथि।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२६)

सांसारिक पदार्थों की नश्वरता की ओर बार-बार संकेत करते हुए उनकी तुलना स्वप्न के समान करते हुए और प्रभु को सत्य स्वरूप मानते हुए मानव को प्रभु-भक्ति हेतु प्रेरित किया है :

जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि।।
इन मै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२७)

संसार की नश्वरता एवं क्षण भंगुरता का पानी के बुलबुले के प्रतीक से अत्यन्त सजीव चित्रण करते हुए गुरु जी समझाते हैं :

जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत।।
जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२७)

स्थायी सुख की अभिलाषा रखने वालों हेतु गुरु जी का परामर्श है—— सदैव प्रभु की शरण में रहो :

जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह।।

कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह ।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२७)

गुरु जी तो दिन-रात प्रभु-नाम का सुमिरन करने वाले को प्रभु का ही साक्षात रूप मानते हुए पावन फरमान करते हैं :

जो प्रानी निसि दिनु भजै रूप राम तिह जानु ।।
हरि जन हरि अंतरु नही नानक साची मानु ।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२७)

इसके विपरीत पांच भौतिक शरीर का अभिमान करने वालों को गुरु जी बड़ी सहजता से समझाते हैं :

गरबु करतु है देह को बिनसै छिन मै मीत ।।
जिहि प्रानी हरि जसु कहिओ
नानक तिहि जगु जीति ।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२८)

संसार की नश्वरता एवं क्षणभंगुरता के गूढ़ रहस्य को रेत की दीवार के समान बताते हुए गुरु जी अत्यधिक प्रभावी ढंग से जगत-रचना की अस्थिरता का सटीक चित्र प्रस्तुत करते हैं :

जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ।।
कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति ।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२९)

गुरु जी संसार की नश्वरता को पौराणिक उदाहरणों द्वारा स्वप्न सदृश्य दर्शाते हुए प्रभु-भक्ति हेतु प्रेरित करते हैं। गुरु जी का पावन फरमान है :

रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु ।।
कहु नानक थिरु कछु नही
सुपने जिउ संसारु ।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२९)

'होनहार (होनी) बलवान है', इस तथ्य को समझाते हुए गुरु जी का फरमान है कि इस संसार रूपी सराय में सभी मुसाफिर हैं, जो आते-जाते रहते हैं। मृत्यु की अटल सच्चाई से रू-ब-रू करवाते हुए, चिन्ता को त्याग कर चिन्तन द्वारा अमूल्य जीवन सफल बनाने की प्रेरणा गुरु जी के द्वारा समूची मानवता को निम्नलिखित सलोक में प्रभावशाली ढंग से दी गई है :

चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ।।
इहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२९)

समस्त जंजालों को छोड़ कर सदैव साथ देने वाले प्रभु का गुणगान करने की प्रेरणा दी गई है। गुरु जी मानव-मन की फितरत को उजागर करते हुए स्पष्ट करते हैं कि मुसीबत में सब संगी-साथी साथ छोड़ जाते हैं। ईश्वर के अतिरिक्त कोई भी साथ देने वाला नहीं है :

संग सखा सभि तजि गए
कोऊ न निबहिओ साथि ।।
कहु नानक इह बिपति मै टेक एक रघुनाथ ।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२९)

अंत में गुरु जी मनुष्य जीवन में गुरु-उपदेश, साधु-संगत तथा प्रभु-सुमिरन की गुणवत्ता बताते हुए समझाते हैं कि हे भाई!

जिस किसी भी मनुष्य ने इस संसार में प्रभु-सुमिरन वाला गुरु का पावन उपदेश अपने हृदय में बसाया है तो प्रभु ऐसे जीव के साथ सदैव बना रहता है :

नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुरु गोबिंदु ।।
कहु नानक इह जगत मै
किन जपिओ गुर मंतु ।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२९)

अन्तिम सलोक में भी गुरु जी ने प्रभु-नाम-सुमिरन की महिमा का गुणगान करते हुए हरि-नाम को संकटमोचन, दुखहर्त्ता बताया है। हरि-सुमिरन की बदौलत दुख-दर्द एवं समस्त कष्टों का निवारण तो होता ही है, साथ ही प्रभु के दर्शन भी नसीब होते हैं :

राम नामु उर मै गहिओ जा कै सम नही कोइ ।।
जिह सिमरत संकट मिटै दरसु तुहारो होइ ।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२९)

गुरबाणी में अन्यत्र भी प्रभु-सुमिरन एवं निर्मल कर्म को ही समस्त धर्मों का सार बताया गया है :

सरब धरम महि स्रेसट धरमु ।।
हरि को नामु जपि निरमल करमु ।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २६६)

इस प्रकार गागर में सागर भरने वाली श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी गहन-गंभीर होते हुए अनुराग, वैराग्य एवं त्याग-भाव से परिपूर्ण है, जो मानव जीवन के अति महत्वपूर्ण उद्देश्य की पूर्ति हेतु सदैव साधनारत रहने हेतु प्रेरित करती है। साथ ही उद्देश्य-प्राप्ति में बाधक तत्वों को स्पष्ट करते हुए उससे मुक्ति का सहज समाधान प्रस्तुत कर वैराग्य-भाव में कभी भी निराशा-हाताशा का जीवन में प्रवेश नहीं होने दिया गया। संसार की नश्वरता एवं क्षणभंगुरता का बारंबार चित्रण करते हुए भी अपनी बाणी में गुरु जी ने उदासीनता का भाव उद्दीप्त नहीं होने दिया। इस प्रकार गुरु जी की अमृतमयी बाणी सांसारिक पदार्थों एवं सम्बधों के प्रति अनासक्त भाव रखने के लिए शांत रस से ओत-प्रोत ब्रज भाषा की मधुरता लिए हुए, गुरु जी की गहन साधना के प्रत्यक्ष दर्शन करवाती हुई तपित हृदयों को असीम सकून एवं शांति प्रदान करने वाली है। विश्व का कोई भी प्राणी गुरु जी की आलौकिक बाणी को पढ़-सुन कर अमल करते हुए विकारों से निजात पाकर 'मैं' के बोध से उत्पन्न मोह तथा लोभ जैसे विकारों को त्याग कर केवल स्वयं को ही मुक्त नहीं करेगा, अपितु मुक्तिदाता बन दूसरों का भी उद्धार करने में सक्षम हो जाएगा। इस संदर्भ में गुरु जी की बाणी अति प्रासंगिक है :

जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार ।।
कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार ।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२७)

गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब

-डॉ. परमवीर सिंघ*

गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब शिवालिक की पहाड़ियों पर उत्तराखंड में स्थित है। इस इलाके को 'तप-स्थान', 'तपो-बन', 'तपो-भूमि' आदि नामों के साथ जाना जाता है। हिंदू धर्म से सम्बन्धित प्रसिद्ध धार्मिक स्थान गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ इस इलाके में ही स्थित हैं। श्रद्धालु इन धार्मिक स्थानों की यात्रा को पुण्य-कर्म समझते हुए दुर्गम मार्ग को भावनावश पार कर जाते हैं। प्राचीन काल के दौरान इन धार्मिक स्थानों की यात्रा निश्चित रूप से बड़े कठिन संघर्ष की सूचक थी परन्तु वर्तमान समय में सड़कों के निर्माण तथा यातायात के आधुनिक साधनों ने इसे बहुत ही आसान कर दिया है। स्कूल की छुट्टियों के दौरान इन धार्मिक स्थानों की यात्रा करने वालों की संख्या बहुत ज्यादा बढ़ जाती है और सरकार द्वारा किये गए समूह प्रबंध भी नाममात्र नज़र आने लगते हैं। आध्यात्मिक लाभ लेने से पहाड़ों की ख़ूबसूरती का आनंद उठाने और शारीरिक तंदरुस्ती प्राप्त करने की प्रफुल्लित हो रही रुचि के कारण भी इन स्थानों की यात्रा करने वालों की संख्या प्रत्येक वर्ष बढ़ती जा रही है।

गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब में सिक्ख धर्म से सम्बन्धित एक प्रमुख गुरुधाम सुशोभित है, जिसका सम्बन्ध श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पूर्व जीवन के साथ बताया जाता है। मात-लोक में अपने जीवन-काल (१६६६- १७०८ ई.) के दौरान गुरु जी इस स्थान पर कभी नहीं जा सके थे परन्तु उनकी एक बाणी 'बचित्र नाटक' में इसका प्रमुखता के साथ वर्णन मिलता है, जिसके आधार पर ही सिक्ख श्रद्धालुओं और विद्वानों के मन में इस स्थान की जानकारी प्राप्त करने में रुचि पैदा हुई है। भाई संतोख सिंघ इस स्थान का ज़िक्र करते हुए कहते हैं—''हेमकुंट परबत बिसतारा। झरने झरहिं अनेक प्रकारा।''

भाई संतोख सिंघ के बाद पंडित तारा सिंघ नरोत्तम ने श्री हेमकुंट साहिब का प्रमुखता के साथ ज़िक्र किया है। यह सिक्ख धर्म के प्रसिद्ध विद्वान और शोधकर्ता थे, जो कि निर्मल पंचायती अखाड़े के श्रीमहंत की पदवी तक पहुंच गए थे। इन्होंने सिक्ख धर्म के विभिन्न विषयों पर महत्वपूर्ण पुस्तकों की

*सिक्ख विश्वकोश विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला—१४७००२, फोन : ९८७२०-७४३२२

रचना की है। ' श्री गुरु तीर्थ संग्रह' शीर्षकाधीन इनकी पुस्तक गुरुधामों के सम्बंध में अति महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है। १८८३ ई. में तैयार हुई इस पुस्तक में गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब का वर्णन मिलता है जिसमें मौजूद जानकारी से पता चलता है कि लेखक ने ख़ुद इस स्थान के दर्शन किये थे। बद्रीनाथ की यात्रा पर जाते समय इन्हें इस स्थान की जानकारी प्राप्त हुई थी और इसके दर्शन करने के पश्चात् ये बताते हैं कि ''जिसके ऊपर बद्रीनारायण का मंदिर है, उस पर्वत का नाम 'गंधमादन' है। गंधमादन से छः कोस नीचे के पर्वत का नाम सतस्रिंग है। उसमें पांडु ने यज्ञ किया। अब ऊहां पंडकेसर ग्राम बस्ता है। बद्रीनारायण की यात्रा सभ ऊहां होकर जाती है। किनारे जाने को रास्ता नहीं। सतस्रिंग से आठ कोस ऊपर गुरु जी ने तप किया।''

पंडित तारा सिंघ नरोत्तम के बाद संत सोहण सिंघ का ध्यान इस स्थान का आविष्कार करने की तरफ गया था। टेहरी के गुरुद्वारा साहिब में ग्रंथी सिंघ की सेवा करते समय जब भाई वीर सिंघ की रचना 'श्री कलगीधर चमत्कार' में से 'हेमकुंट से सचखंड' वाला प्रसंग पढ़ा तो इनका ध्यान इस स्थान की तरफ गया। १९३४ ई. के दौरान पहली बार इन्होंने इस स्थान के दर्शन किये थे तब मन में विचार आया कि इस स्थान को विकसित किया जाये। इन्होंने जगह-जगह जाकर इस स्थान के बारे में संगत को बताना शुरू किया और इसके निर्माण के लिए धन देने की विनती करने लगे। १९३५ ई. में श्री अमृतसर साहिब में इनकी मुलाकात भाई वीर सिंघ के साथ हुई, जो कि पहले ही अपनी पुस्तक में इस स्थान का उल्लेख कर चुके थे। फिर भी इस अविष्कार को और दृढ़ता प्रदान कर जब वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि यही वो स्थान है जहाँ दसम पातशाह ने पूर्व जन्म में तप किया था, तो इस स्थान पर गुरु जी की यादगार स्थापित करने के लिए उन्होंने मन में दृढ़ निश्चय धारण कर लिया था। भाई साहिब ने संत सोहण सिंघ को इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए कहा, तो उन्होंने इस स्थान के निर्माण के लिए प्रयास करना आरंभ कर दिया, जिसके फलस्वरूप अक्तूबर १९३६ ई. में वहाँ १०x१० फुट आकार के एक गुरुधाम का निर्माण कर दिया गया। इसके आगे तीन फुट का बरामदा बनाया गया। जिस स्थान पर मुश्किल मार्ग तय कर पहुँचना कठिन हो वहाँ निर्माण-सामग्री का पहुंचना कोई आसान कार्य नहीं। अगले वर्ष १९३७ ई. में इस स्थान पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश किया गया और १९३८ ई. में बाबा मोदन सिंघ के प्रयास से यहाँ निशान साहिब सुशोभित कर

दिया गया। कहा जाता है कि पोशाके सहित लगभग २५ फुट लम्बा लोहे की चादर का बना हुआ निशान साहिब लेकर ये गुरुद्वारा हेमकुंट साहिब वाले तप-स्थान पर गए थे और कार्तिक की पूर्णमासी को इन्होंने इसे वहाँ पर झुला दिया था।

श्री हेमकुंट साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का यादगारी गुरुधाम तो स्थापित हो गया, मगर इसका प्रबंध स्थायी रूप से चलाना एक बड़ी चुनौती का काम था। इसी विचार को मन में लेकर १९३८ ई. में जब संत सोहण सिंघ श्री अमृतसर साहिब में भाई वीर सिंघ के पास गए तो उनके मन की उलझन हल हो गई। यहाँ उनकी मुलाकात श्री गुरु सिंघ सभा मसूरी के प्रधान स. हरनाम सिंघ के साथ हुई, जिन्हें भाई साहिब ने प्रेरित किया कि वे गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब की सेवा-संभाल की ज़िम्मेदारी उठाएं। प्रधान साहिब ने अति उत्साहपूर्वक भाई साहिब के आदेश को स्वीक ार कर लिया था।

मसूरी के गुरुद्वारा साहिब की समिति द्वारा गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब की सेवा-संभाल अपने हाथ में ले लेने के बाद भी संत सोहण सिंघ एक ऐसी शख्सियत की खोज में थे जो इस कार्य को गुरु-भावना में रह कर सम्पूर्ण करने का सामर्थ्य रखती हो। मसूरी में इनका आना-जाना लगा रहता था और यहीं पर इनकी मुलाकात बाबा मोदन सिंघ के साथ हुई थी, जिनकी सिक्खी-श्रद्धा और गुरु के प्रति समर्पण की भावना ने इनके मन को प्रभावित किया था। ये पहले भी संत जी के साथ गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब की यात्रा कर आए थे, जिस कारण इन्हें उस स्थान की जानकारी थी। संत जी का १३ फरवरी, १९३९ ई. को श्री अमृतसर साहिब में निधन हो गया। अब बाबा मोदन सिंघ ने अपना समूचा जीवन इस गुरुधाम की सेवा-संभाल के लिए अर्पित कर दिया।

गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब के साथ-साथ श्री गोबिंद धाम और श्री गोबिंद घाट के निर्माण तथा इन स्थानों पर संगत की रिहायश, लंगर तथा अन्य सुविधाएं प्रदान करने के लिए इन्होंने तन-मन-धन के साथ योगदान दिया था। बीसवीं सदी के चौथे दशक के दौरान यह अच्छी ख़बर सामने आई कि समिति के चिट्ठी-पत्र के माध्यम से प्राप्त निवेदन को स्वीकार करते हुए अंग्रेज़ सरकार ने घाघरा में १० नाली (१ नाली=२१६० स्केयर फुट) और पुलना गाँव में ४ नाली ज़मीन देना मंजूर कर लिया है।

समय बीतने के साथ-साथ गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब से सम्बन्धित जानकारी संगत में प्रचलित हो रही थी, जिस कारण कोई एकआध संगत इस स्थान के दर्शन करने के

लिए जाया करती थी। १९४६ ई. में बाबा मोदन सिंघ सहित चार सज्जन इस स्थान के दर्शन करने के लिए गए थे, जिनमें से एक डॉ. तारा सिंघ भी शामिल थे। वे बताते हैं कि हम चारों ने मिल कर गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब में पहला अखंठ पाठ साहिब किया था।

भाई वीर सिंघ की प्रेरणा से चीफ़ ख़ालसा दीवान की तरफ से इस गुरुधाम की सेवा-संभाल के लिए यत्न आरंभ कर दिए गए थे। बीसवीं सदी के पाँचवें दशक के दौरान ये यत्न और ज्यादा तेज़ कर दिए गए थे, जब श्री गोबिंद घाट से श्री गोबिंद धाम तक और यहाँ से ऊपर गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब तक की चढ़ाई के लिए जाने वाले मार्ग को पक्का करने का कार्य तेज हो गया था। निचली सड़क तो सरकार ने ही बनानी शुरू कर दी थी। श्री गोबिंद धाम से ऊपर का मार्ग ठीक करने का कार्य चीफ़ ख़ालसा दीवान ने अपने जिम्मे ले लिया था। 'खालसा समाचार' बताता है कि १९५२ ई. में दीवान की तरफ से ४० यात्रिओं का पहला आधिकारिक जत्था गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब की यात्रा पर गया था, जिसमें एक रागी जत्था, एक सूरमा सिंघ, छः महिलाएं और एक ७८ वर्षीय वृद्ध शामिल था। १९५३ ई. में दूसरा जत्था इस स्थान के दर्शन करने के लिए गया था, जिसमें २७ यात्री शामिल थे।

इस प्रकार गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब की शोभा दिनो-दिन बढ़ती रही, जिसका प्रबंध चलाने के लिए मार्च १९६० ई. में एक ट्रस्ट की स्थापना की गई। हवलदार मोदन सिंघ, कर्नल जोगिंदर सिंघ मान, स. शमशेर सिंघ, कर्नल अमर सिंघ, स. गुरमुख सिंघ, स. रघुबीर सिंघ तथा स. गुरबख़्श सिंघ इसके सदस्य थे। ट्रस्ट बनने के पश्चात् गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब के नवनिर्माण और संगत के लिए सुविधाएं प्रदान करने के कार्य में तेज़ी आ गई थी। सबसे पहले यह महसूस किया गया कि गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब की इमारत गुरु साहिब की महानता को प्रकट नहीं करती। सितम्बर, १९६१ में इसके पुनर्निर्माण के लिए तैयार किया गया नक्शा संगत के साथ साझा करते हुए एलान किया गया कि गुरुद्वारा साहिब की नई इमारत के निर्माण का कार्य इसी वर्ष आरंभ कर दिया जाएगा। समय के साथ-साथ इस स्थान की शोभा में वृद्धि करने के लिए निरंतर यत्न किये जाते रहे हैं और यहाँ पहुँचने वाली संगत की सुविधा के लिए चाय, खिचड़ी आदि लंगर का प्रबंध करने के लिए गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब ट्रस्ट की तरफ से भरपूर सहयोग दिया जाता है।

गुरुद्वारा : सैद्धांतिक और व्यावहारिक स्वरूप

-सतविंदर सिंघ फूलपुर*

सिक्ख का गुरु और गुरुद्वारे के साथ लहू-मांस वाला रिश्ता है। गुरु-प्रेम और संगत का लगाव गुरसिक्खों के मन में गुरुधामों के दर्शन करने की इच्छा पैदा करता है। सिक्खों का गुरुद्वारे के साथ इस हद तक लगाव है कि गुरसिक्ख अपने गुरुधामों की पवित्रता के लिए मर-मिटने को भी तैयार रहते हैं। देश की हदबंदियों के कारण जिन गुरुद्वारों—गुरुधामों से को गुरसिक्खों को बिछड़ना पड़ा, दुनिया के प्रत्येक कोने में बैठा सिक्ख रोज़ाना की अरदास में उन गुरुधामों के दीदार की इच्छा अकाल पुरख के आगे व्यक्त करता है। गुरुधामों के दर्शन सिक्खों के मन में ऐसा रूहानी आनंद प्रदान करते हैं कि मन दुनियावी दुविधाओं से मुक्त होकर सहज की अवस्था में आ जाता है।

'गुरुद्वारा' के कोशगत अर्थ : सतिगुरु का घर, वह स्थान जहाँ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश हो, संगत जुड़े, सत्य की विचार और सत्य का विस्तार होता हो, जहाँ सिक्खी का प्रचार किया जाये और गुरमति की शिक्षा दी जाये तथा मानवाधिकारों की रक्षा के लिए यत्न किये जाएँ, उस स्थान का नाम 'गुरुद्वारा' है।[१]

प्रारंभ में इसका नाम 'धर्मसाला' (धर्मशाला) था।[२] इसका गुरुद्वारा नाम बाद में प्रचलित हुआ। भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार, ''श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु अरजन देव जी तक सिक्खों के धर्म-मंदिर का नाम 'धर्मसाल' रहा है। श्री गुरु अरजन देव जी ने सबसे पहले 'अमृतसर' सरोवर के धर्म-मंदिर को 'हरिमंदर' संज्ञा प्रदान की। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय में धर्मसाल की संज्ञा गुरुद्वारा हुई।''[३] साधारण तौर पर गुरुद्वारे का नाम लेते समय हमारे मन में एक ख़ास किस्म का बिम्ब बनता है, जिसमें किसी गुंबदनुमा इमारत में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश, गुरबाणी-कीर्तन का चलता प्रवाह, झूलता हुआ खालसाई निशान साहिब, सरोवर, संगत-पंगत आदि शामिल होते हैं। ये सभी गुरुद्वारे के ढांचागत स्वरूप का अहम अंग हैं।

संकल्प रूप में गुरुद्वारे के अर्थ गुरु की शरण, गुरु का आसरा करना अधिक उचित हैं।

गुरुद्वारे जाना और गुरुद्वारा (गुरु का दर) प्राप्त करना दो अलग-अलग बातें हैं। गुरुद्वारे जाना गुरुद्वारे का व्यावहारिक सरोकार है, जबकि गुरुद्वारा प्राप्त करना गुरुद्वारे का संकल्प है। हम इस लेख में धर्मसाल और गुरुद्वारे को एक ही

*संपादक। फोन : ९९१४४-१९४८४

अर्थों में लेंगे।

श्री गुरु नानक देव जी ने 'जपु' बाणी में सारी धरती को ही धर्मसाल अर्थात् धर्म कमाने वाली जगह कहा है :

राती रुती थिती वार ।।
पवण पाणी अगनी पाताल ।।
तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७)

इस धरती-धर्मसाल का ज्ञान उन जिज्ञासुओं को होता है जिन्होंने गुरुद्वारे (धर्मसाल) के माध्यम से धर्म (आत्मिक ज्ञान) कमा कर मनुष्य जीवन के आदर्श को समझते हुए उच्च आत्मिक अवस्था प्राप्त कर ली हो। इस धरती धर्मसाल का ज्ञान करवाने के लिए श्री गुरु नानक देव जी ने "घरि घरि अंदरि धरमसाल का संकल्प प्रचलित किया। जिज्ञासु पहले नाम की कमाई करने के लिए धर्मसाल (गुरुद्वारे) जाता है। वहाँ जाकर जब उसे *"जेता कीता तेता नाउ ।।"* और *"नाम के धारे सगले जंत।। नाम के धारे खंड ब्रहमंड ।।"* का ज्ञान होता है तो उसे पूरी धरती धर्मसाल नज़र आने लगती है। धरती-धर्मसाल का ज्ञान करवाने के लिए गुरुद्वारा (धर्मसाल) प्रथम पड़ाव है।

इस प्रकार धरती-धर्मसाल के ज्ञान के लिए गुरु का दर प्राप्त करना पहली शर्त है। गुरु का दर कैसे प्राप्त होता है,' इस बारे में 'सिध गोसटि' बाणी में चरपट योगी का श्री गुरु नानक देव जी के साथ संवाद पठनीय है। चरपट योगी श्री गुरु नानक देव जी से प्रश्न करता है कि "स्वामी! मेरी विनती सुनो! मैं सही विचार पूछता हूँ! बुरा मत मानना! उत्तर दीजिए कि गुरु का दर कैसे प्राप्त होता है?

सुणि सुआमी अरदासि हमारी
पूछउ साचु बीचारो ।।
रोसु ना कीजै उतरु दीजै किउ पाईऐ गुर दुआरो ।।

श्री गुरु नानक देव जी उत्तर देते हैं कि जब सचमुच गुरु का दर प्राप्त हो जाता है तो यह चंचल मन प्रभु की याद में जुड़ जाता है। प्रभु का नाम ज़िंदगी का आसरा हो जाता है। ऐसा प्यार प्रभु संग तब होता है जब प्रभु स्वयं जीव को अपनी याद में जोड़ लेता है :

इहु मनु चलतउ सच घरि बैसै
नानक नामु अधारो ।।
आपे मेलि मिलाए करता लागै साचि पिआरो ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९३८)

गुरुद्वारे जाना तभी शोभा देता है यदि मन गुरु के शब्द में लीन हो जाये :

सभि रस भोगण बादि हहि सभि सीगार विकार ।।
जब लगु सबदि न भेदीऐ किउ सोहै गुरदुआरि ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १९)

'जपु' बाणी में वर्णित मानवीय आत्म विकास की पाँच अवस्थाओं (पाँच खंडों) में से गुरुद्वारा (धर्मसाल) धर्म खंड (पहली अवस्था) का व्यावहारिक रूप कहा जा सकता है। धर्म खंड (पहली अवस्था) में जिज्ञासु सारी सृष्टि को नियम बद्ध समझता है और अपनी धार्मिक नियमावली का पालन करता हुआ आत्मिक सफ़र शुरू करता है।[४] इस आत्मिक सफ़र का

पहला मुकाम गुरुद्वारा है। जो गुरसिक्ख (अभ्यासी) गुरुद्वारे के संग भावनावश जुड़कर गुरु की शरण के माध्यम से धर्म खंड का अनुगामी बन शब्द की कमाई करता है, गुरु की कृपा द्वारा उसका दसम द्वार, जो पहले गुप्त था, प्रकट हो जाता है अर्थात् उसकी चेतना जागृत हो जाती है :

गुरदुआरै लाइ भावनी
इकना दसवा दुआरु दिखाइआ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९२२)

इस अवस्था में मानवीय चेतना मनोवैज्ञानिक बारीकियों, सुहज, सूक्ष्मताओं ध्यानी महीनताओं और सामाजिक चेतनाओं के सम्पूर्ण प्रसार को ज़ब्त में लेकर अपने असली घर 'शब्द' में समा जाती हैं। इस हालत में मानवीय जिज्ञासा के सम्पूर्ण प्रसार जाग कर शब्द की अनुभूति में शामिल होकर आखिरी संतुलन में आ जाते हैं।५ इस प्रकार *''तह अनेक रूप नाउ नव निधि तिस दा अंतु न जाई पाइआ ।।''* वाली अवस्था बन जाती है।

गुरुद्वारे के साथ भावना जोड़ने वालों की सुरत, मति, मन, बुद्धि नये सिरे से तराशी जाती है। इस तरह इसे सरम खँड (Realm Of Conversion) का प्रवेश द्वार कहा जा सकता है।

यहाँ आकर मानवीय मन में स्वाभाविक ही परिवर्तन आ जाता है। कठोर मन में नम्रता आ जाती है। यहाँ पर दुनियावी शब्दावली की जगह पवित्र शब्दावली का प्रयोग होने लग जाता है। ऐसा व्यवहार निश्चय ही मानवीय हृदय को पवित्र करन के योग्य होता है, इसलिए श्री गुरु नानक पातशाह गुरु के दर से प्राप्त विवेक बुद्धि के माध्यम से विषय-विकारों की मैल को धोकर हृदय रूपी बर्तन को शुद्ध करने का उपदेश करते हैं :

भांडा हछा सोइ जो तिसु भावसी ।।
भांडा अति मलीणु धोता हछा न होइसी ।।
गुरू दुआरै होइ सोझी पाइसी ।।
एतु दुआरै धोइ हछा होइसी ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७३०)

गुरमति के अनुसार इस जगत में एक अकाल पुरख सबका पति परमेश्वर है, और सभी जीव उसकी स्त्रियां हैं, इसलिए प्रत्येक गुरसिक्ख का विवाह गुरुद्वारे के माध्यम से प्रभु-पति के साथ होना है। फरमान है :

गुरू दुआरै हमरा वीआहु जि होआ
जां सहु मिलिआ तां जानिआ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३५१)

गुरुद्वारे (गुरु की शरण में जाकर) जब जीव-स्त्री को पता चलता है कि मेरा सहु (पति) तो सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वोच्च तथा गुणी निधान है, इसके संग जुड़कर ही इसकी कृपा से मैं भी सत्, संतोष, दया, धर्म आदि सद्गुण धारण कर लूँगी तो फिर ऐसी सुहागिनों को किसी अन्य की जरूरत नहीं रहती :

जिन्हा नाउ सुहागणी तिन्हा झाक न होर ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३८४)

इस प्रकार गुरुद्वारे के माध्यम से प्रभु प्रियतम के साथ विवाह हो जाने के बाद उनकी मढ़ी-मसानों, कब्रों, ढोंगी साधुओं के डेरों आदि पर

जाने की इच्छा ख़त्म हो जाती है। उसकी गुरुद्वारे और प्रभु-प्रियतम में दृढ़ भावना पैदा हो जाती है। सतिसंगत रूपी सुहागिन गुरुद्वारे में मिल-बैठ कर अपने प्रभु-पति के गुणों के गीत गाती है।

भाई गुरदास जी लिखते हैं कि जैसे हंसों का झुंड मानसरोवर पर बैठता है और अमूल्य मोती खा-खाकर प्रसन्न होता है, जैसे सज्जन-मित्र रसोई में मिल-बैठ कर नाना प्रकार के भोजन आदि रस खाते हैं, जैसे वृक्ष की छाया में अनेक पक्षी आकर बैठते हैं और मीठे फल खाकर मीठे बोलों द्वारा गुनगुनाते हैं, इसी प्रकार सतिगुरु के आज्ञाकारी गुरसिक्ख धर्मसाल (गुरुद्वारे, गुरु की शरण) में मिल बैठते हैं और गुरु-ज्ञान (गुरु-शब्द) के नाम-अमृत-रस को पी-पीकर तृप्त होते हैं :

जैसे तौ मराल माल बैठत है
मानसर मुकता अमोल खाइ खाइ बिगसात है।
जैसे तौ सूजन मिलि बैठत है
पाकसाल अनिक प्रकार बिंजनादि रस खात है।
जैसे द्रुम छाया मिल बैठत
अनेक पंछी खाइ फल मधुर बचन कै सुहात है।
तैसे गुरसिख मिल बैठत धरमसाल
सहज सबद रस अंम्रित अघात है। *(कबित्त)*

गुरबाणी में बार-बार जिस विवेक बुद्धि की याचना की गई है, वह गुरु के दर से प्राप्त होती है :

. . . मै कीए करम अनेका ।।
हारि परिओ सुआमी कै दुआरै
दीजै बुधि बिबेका ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६४१)

गुरु के दर से विवेक बुद्धि हासिल कर चुका व्यक्ति निर्लिप्त और निष्काम होता है। ऐसे श्रेष्ठपुरुष की चाल ही निराली होती है। उसने मन, वचन और कर्म के कुंडलों को, इनकी गाँठों को, सत्संगत में ढीला कर खोल लिया होता है और जीवन-शक्ति के स्तंभ को परम आनंद के रूप में अनुभव कर लिया होता है। फिर उसे मंदिर, मस्जिद, पुराण, कुरान आदि में कोई भेद दिखाई नहीं देता। वह अलग-अलग भेसों, कर्मकांडों की व्यर्थता की बात तो करता है, परन्तु इस सब में से मानवता को झुठला नहीं सकता। मानस की जाति के परस्पर संबंधों, भाईचारे और एक-दूसरे पर प्रेमपूर्ण अधिकार को परमात्मा द्वारा मानव को दी हुई बख़शीश मानता है। ज्ञान से भरपूर उसकी विवेक बुद्धि उसे सूरज, धरती, पवन, पानी, आकाश आदि सब पर सबके समान अधिकार समझने की प्रेरणा देती है। दरअसल उसे कहने और कहा हुआ बूझने की समझ आ गई होती है। विवेक बुद्धि व्यक्ति का वह अंतर्गत आधार है जिसके सहारे वो आत्मिक जगत की गहराइयों में गोता लगा कर उसमें से शक्ति प्राप्त कर, उस शक्ति का सदुपयोग बाहरी जगत के लिए करता हैं।६

इस विवेक बुद्धि द्वारा ही उसे निर्मल कर्म का ज्ञान हो जाता है। गुण, संतोष, दया, धर्म, धैर्य, सेवा, नेकी, परोपकार, ईमानदारी, निडरता, सहनशीलता, क्षमा, नम्रता आदि सद्‌गुण उसके जीवन का आधार बन जाते हैं।

व्यावहारिक रूप में गुरुद्वारे के कार्य-क्षेत्र के बारे में भाई कान्ह सिंघ नाभा के विचार विशेष रूप से विचारने योग्य हैं कि "सिक्खों का

गुरुद्वारा विद्यार्थियों के लिए स्कूल, आत्म-जिज्ञासा वालों के लिए ज्ञान-उपदेशक आचार्य, रोगियों के लिए शफ़ाखाना, भूखों के लिए अन्नपूर्णा, स्त्री वर्ग की आबरू की रक्षा के लिए लोहमयी दुर्ग और मुसाफ़िरों के लिए विश्राम-स्थल है।[७]

व्यावहारिक रूप में गुरुद्वारे की उक्त परिभाषा आदर्श समाज का केंद्रीय बिंदु है। यह 'बेगमपुरा' के संकल्प का व्यावहारिक रूप है। बशर्ते कि उक्त सभी बातें न्यायसंगत ढंग के साथ व्यावहारिक रूप में घटित होती हों। इस प्रकार सिक्ख धर्म का गुरुद्वारा मानवीय जीवन का धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक आदि विभिन्न पक्ष से भी नेतृत्व करता है। व्यावहारिक रूप में गुरुद्वारे की बाकी धर्म- स्थानों की अपेक्षा विलक्षणता और विशेष महत्ता इस बात से है कि यहाँ हर मनुष्य बिना जात- पांत, ऊँच-नीच, छुआ-छूत, लिंग-भेद के आकर एक परमात्मा की इबादत में शामिल हो सकता है। यहाँ पर किसी के साथ भेदभाव नहीं किया जाता। यहाँ से ''एकु पिता एकस के हम बारिक'' और ''सभे साझीवाल सदाइनि'' का उपदेश दिया जाता है। इस प्रकार धर्मों के इतिहास में मतभेद को तोड़ कर एकात्मकता का काम पहली बार गुरुद्वारे ने किया। गुरुद्वारे ने लोगों में छार्मिक शासन प्रबंधवाद का भाव पैदा किया और सामूहिक रूप से बैठने की जाच सिखायी। इसी एकता ने भारत को सदियों बाद ग़ुलामी की जंजीरों से मुक्त करवाया।

उक्त विचार-चर्चा से यह स्पष्ट होता है कि गुरुद्वारा जहाँ गुरु का द्वार है, मानवाधिकारों की रक्षा, बुनियादी ज़रूरतों की प्राप्ति की प्रेरणा का केंद्र, धर्म कमाने की धर्मसाल है, वहाँ आत्मिक और रूहानी मंडल के जिज्ञासुओं के लिए एक ऐसा कोटगढ़ है, जहाँ काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के विषय मानवीय मन में प्रवेश नहीं कर पाते और जिज्ञासु की समूची वासनाएं तथा कामनाएं गुरु को समर्पित होकर प्रार्थनाओं में तबदील हो जाती हैं, जहाँ ''तूं तूं करता तू हूआ मुझ महि रहा न हूं'' की अवस्था पैदा हो जाती है, जहाँ रूहानियत की पराकाष्ठा हो जाती है, जहाँ तीनों भुवनों का ज्ञान प्राप्त हो जाता है, दसम द्वार खुलता है और मन शांतचित्त, आनन्दित हो जाता है। भक्ति और शक्ति से लबरेज़ होकर मानव सर्वकल्याणकारी हो जाता है। यही गुरुद्वारे की महानता है और यही गुरुद्वारे का मकसद है।

हवाले और टिप्पणियाँ :

१. संता सिंघ ततले, गुरबाणी तत्त सागर, जिल्द तीसरी, पृष्ठ १३५

२. पुरातन जन्म साखी में गुरु नानक पातशाह द्वारा पहली धर्मसाल तुलम्बा में स्थापित करने के प्रमाण मिलते हैं।

३. भाई कान्ह सिंघ नाभा, महान कोश, पृष्ठ ४१६

४. पिआरा सिंघ पदम, गुरु ग्रंथ संकेत कोश, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, पृष्ठ १३४

५. प्रो. जगदीश सिंघ मुकेरियाँ, हस्तलिखित लेख, गुरबाणी व्याख्या दी सहिज प्रणाली

६. डॉ. जोध सिंघ, धर्म अध्ययन : अकादमिक परिपेक्ष, पृष्ठ ६

७. महान कोश, पृष्ठ ४१६-१७

कविताएं

धर्म की चादर श्री गुरु तेग बहादर साहिब

*-स. करनैल सिंघ सरदार पंछी**

धर्म पे सतिगुरु तेग बहादर जी कुर्बान हुए हैं।
हिंद की इज्जत, धर्म की चादर का उनवान हुए हैं।

धर्म की खातिर दे दी जान प्यारे सतिगुरु ने,
पूरे भारत में शान-ए-हिंदुस्तान हुए हैं।

इनकी कलम ने जो लिखी है बाणी सोने जैसी,
शब्दों की दौलत से वे, सोने की खान हुए हैं।

औरंगज़ेब ने क्या पाया है उनका शीश काट कर?
धर्म के रक्षक गुरु, शहीदों के सुलतान हुए हैं।

कशमीरी पंडितों पे होते जुल्म थे औरंगजेबी,
सुनकर उनकी दर्द-कहानी, खुद परेशान हुए हैं।

उनकी शुभ शिक्षा ने बदली हर इन्सान की किस्मत,
उनके सारे शब्द भी, रब का फरमान हुए हैं।

शहीद भाई मतीदास जी

भाई मतीदास जी को श्री गुरु तेग बहादर साहिब को शहीद करने से पूर्व दिल्ली के चांदनी चौक में जालिम बादशाह औरंगजेब के हुक्मानुसार ११ नवंबर, १६७५ ई. को काजी अब्दुल वहाब ने काफिर का फतवा देकर लकड़ी चीरने वाले आरे से चिरवा कर शहीद कर दिया था।

अरे जल्लाद! सर मेरे पे चलता है तेरा आरा!
मैं पढ़ता हूँ गुरबाणी तो देता है मज़ा आरा!

मुझे तो जान से भी प्यारा है यह सिक्ख धर्म अपना,
दिखाता है मुझे तो मुक्ति का ही रास्ता आरा!

मैं तेरा ज़ुल्म देखूंगा, परख तू हौसला मेरा,
चला आरा! चला आरा! चला आरा! चला आरा!

गलत रस्ता गलत ही है बता दे अपने मालिक को,
'मतीदास' ऐसे रस्ते पर कभी भी बढ़ नहीं सकता!

तू मेरे जिस्म के टुकड़े तो कर सकता है ऐ ज़ालिम,
मगर सिक्खी आस्था को कैसे काटेगा तेरा आरा?

मैं सिक्खी छोड़ कर इसलाम को अपना नहीं सकता,
गुरबाणी को तज कर कोई कलमा पढ़ नहीं सकता!

*जेठी नगर, मालेर कोटला रोड, खन्ना- १४१४०१ (जिला लुधियाना), फोन : ९४१७०-९१६६८

ख़बरनामा

एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी लगातार चौथी बार बने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान

श्री अमृतसर साहिब : २८ अक्तूबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पदाधिकारियों के हुए सालाना चुनाव में एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी लगातार चौथी बार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान चुने गए। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय सरदार तेजा सिंघ समुद्री हाल में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की उपस्थिति में आयोजित साधारण सभा के दौरान हुई चयन-प्रक्रिया में कुल १४२ मतों में से १०७ मत प्राप्त कर एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने विजय हासिल की। उनके मुकाबले में बीबी जगीर कौर को ३३ मत मिले, जबकि २ मत रद्द हुए। साधारण सभा के दौरान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी और श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी सुलतान सिंघ तथा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के १४२ सदस्य उपस्थित रहे।

इसके अलावा स. रघूजीत सिंघ (विर्क) को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, स. बलदेव सिंघ कल्याण को कनिष्ठ उपाध्यक्ष और स. शेर सिंघ मंडवाला को महासचिव चुना गया। इन पदाधिकारियों के अलावा ११ सदस्यीय कार्यकारिणी में बीबी हरजिंदर कौर, स. अमरीक सिंघ विछोआ, स. सुरजीत सिंघ तुगलवाल, स. परमजीत सिंघ ख़ालसा, स. सुरजीत सिंघ गढ़ी, स. बलदेव सिंघ कायमपुर, स. दलजीत सिंघ भिंडर, स. सुखहरप्रीत सिंघ रोडे, स. रविंदर सिंघ ख़ालसा, स. जसवंत सिंघ पुड़ैण और स. परमजीत सिंघ रायपुर शामिल हैं। इसके साथ ही आनरेरी मुख्य सचिव के पद पर स. कुलवंत सिंघ मंनण को नियुक्त किया गया।

एडवोकेट धामी ने प्रधान चुने जाने के बाद मीडिया के साथ बातचीत करते हुए कहा कि सिक्ख कौम की यह महान सेवा गुरु साहिबान की कृपा द्वारा प्राप्त हुई है, जिसे वे गुरु साहिबान में आस्था रखते हुए विनम्रता और पंथक भावनाओं के अनुसार निभाने का यत्न करेंगे।

उन्होंने कहा कि इस चुनाव के परिणाम पंथ विरोधी शक्तियों को करारा जवाब हैं। उन्होंने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्यों और शिरोमणि अकाली दल की समूची लीडरशिप का धन्यवाद करते हुए कहा कि उनकी ज़िम्मेदारी अब और भी अधिक बढ़ गई है, जिसके प्रति वे समर्पण भावना के साथ कार्य करेंगे।

एडवोकेट धामी ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की भविष्यमुखी योजनाओं और

प्राथमिकताओं को स्पष्ट करते हुए कहा कि धर्म प्रचार के क्षेत्र में मुख्य रूप से केंद्रित रहा जायेगा और इसके साथ ही स्वास्थ्य, शिक्षा, मानव-कल्याण के कार्यों के प्रति भी विशेष ध्यान दिया जायेगा। उन्होंने कहा कि गुरु साहिबान के उपदेश मानव जीवन के लिए अति अहम हैं, जिनका प्रचार-प्रसार दृढ़ता के साथ किया जायेगा। सिक्खी सिद्धांतों और सिक्ख रहित मर्यादा में दृढ़ता प्रत्येक सिक्ख के लिए लाज़िमी है, जिसके प्रचार को एजंडे पर लिया जायेगा। उन्होंने सभी सिक्ख संप्रदायों और जत्थेबंदियों से सहयोग की आशा करते हुए कहा कि धर्म प्रचार का कार्य समूची कौम का सामूहिक यत्न होना चाहिए, जिसके लिए वे हर संभव यत्न करेंगे।

कार्यकारिणी की सभा में कौमी मुद्दों पर अहम प्रस्ताव पारित

श्री अमृतसर साहिब : १२ नवंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की कार्यकारिणी की सभा में देश के हवाई अड्डों पर सिक्ख कर्मचारियों को कृपाण पहनने से रोकने, कनाडा घटना मामले में सिक्खों के ख़िलाफ़ सृजित किए जा रहे वृत्तांत, पाकिस्तान दूतावास द्वारा सिक्ख श्रद्धालुओं को बड़ी संख्या में वीज़ा न देना और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के चुनाव के लिए बन रही वोटों सहित अन्य पंथक मुद्दों पर अहम पस्ताव पारित किये गए।

सभा के बाद पत्रकारों के साथ बातचीत करते हुए एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि भारत में हवाई अड्डों पर सिक्ख कर्मचारियों को कृपाण पहन कर ड्यूटी करने से रोकना सिक्खों की धार्मिक आज़ादी पर बड़ा हमला है। उन्होंने कहा कि यह भारतीय संविधान का भी उल्लंघन है, क्योंकि सिक्खों को ककारों सहित देश में हवाई यात्रा करने और अपनी धार्मिक मान्यताओं को निभाने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी इस बेहद गंभीर मसले पर हर स्तर पर आवाज़ उठाने के साथ-साथ सिक्खों की धार्मिक आज़ादी के लिए खड़े होने के लिए वचनबद्ध है और इस मामले को सरकार के साथ विचारने के लिए जल्द ही शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का एक शिष्टमंडल भेजा जायेगा। इस शिष्टमंडल में वरिष्ठ उपाध्यक्ष स. रघूजीत सिंघ (विर्क), कनिष्ठ उपाध्यक्ष स. बलदेव सिंघ कल्याण, महासचिव स. शेर सिंघ मंडवाला, मुख्य सचिव स. कुलवंत सिंघ मंनण, सचिव स. प्रताप सिंघ और उप सचिव स. जसविंदर सिंघ जस्सी के नाम शामिल किये गए हैं।

एडवोकेट धामी ने कहा कि बीते दिनों कनाडा में आपसी विचारों की भिन्नताओं एवं टकराव को हिंदू मंदिरों पर सिक्खों द्वारा हमला करार देकर सिक्खों के अक्स को धुंधला किए

जाने की निम्न स्तर की कोशिश का नोटिस लेते हुए कार्यकारिणी द्वारा एक निंदा प्रस्ताव पारित किया गया है। उन्होंने कहा कि सिक्ख कौम सभी धर्मों का सम्मान करती है और कभी किसी के धार्मिक स्थान पर हमले के बारे में सोच भी नहीं सकती। कनाडा में घटी इस घटना को लेकर जिस प्रकार सिक्खों के ख़िलाफ़ नफ़रती प्रचार किया गया, यह आम बात नहीं, बल्कि एक सोची-समझी नीति का ही हिस्सा लगता है। उन्होंने कहा कि एक तरफ़ विदेशों में हुए सिक्खों के कत्ल से सम्बन्धित सरकारों पर लग रहे दोष सवाल पैदा कर रहे हैं, जबकि जांच की जगह जानबूझ कर सिक्खों को बदनाम किया जा रहा है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व के अवसर पर पाकिस्तान स्थित गुरुधामों के दर्शन को जाने वाले श्रद्धालुओं को बड़ी संख्या में वीजा न दिए जाने पर भी एतराज़ प्रकट किया। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सिक्ख श्रद्धालुओं के लिए खुले वीजा की माँग करती है, परंतु सरकारों ने सिक्ख संस्था को पूर्व में मिलते वीजा संख्या में भी बड़ी कटौती कर सिक्ख भावनाओं को चोट पहुंचाई है। उन्होंने कहा कि भविष्य में यह पुन : मुश्किल न आए, इसलिए पाकिस्तान दूतावास के साथ इस सम्बंध में बातचीत करने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का एक शिष्टमंडल जल्द भेजा जाएगा।

इसके साथ ही कार्यकारिणी की सभा में गुरुद्वारा चयन आयोग के मुख्यायुक्त से भी अपील की गई कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की बन रही मतदाता सूचियों का मसौदा प्रकाशित करते समय यह सुनिश्चित किया जाये कि नियमों और शर्तों के विरुद्ध किसी भी अयोग्य व्यक्ति का नाम मतदाता सूची में शामिल न हो। कार्यकारिणी की सभा में गुरुद्वारा साहिबान, ट्रस्ट और एडुकेशन से सम्बन्धित मामले भी विचारे गए। इस दौरान एडवोकेट धामी तथा अन्य अधिकारियों ने सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड द्वारा तैयार की गई पुस्तक 'सिक्ख संघर्ष १९८४ : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की भूमिका' जारी की गई।

चंडीगढ़ में हरियाणा को अलग विधान सभा के लिए ज़मीन देना पंजाब के अधिकारों का हनन : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब : १३ नवंबर : केंद्र सरकार द्वारा चंडीगढ़ में हरियाणा विधान सभा के लिए अलग तौर पर ज़मीन देने के फ़ैसले को पंजाब के अधिकारों का प्रत्यक्ष रूप से हनन करार देते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि सरकार की यह पहुँच पंजाब और पंजाबियों का स्पष्ट रूप से अपमान है। उन्होंने कहा कि चंडीगढ़

की स्थापित पंजाब के दर्जनों गाँवों के वजूद को ख़त्म करने के साथ हुई है, जिस कारण इस महानगर पर केवल पंजाब का ही अधिकार है। केंद्र सरकार द्वारा पंजाब के अधिकारों और हितों को दरकिनार कर अच्छा नहीं किया जा रहा। एडवोकेट धामी ने कहा कि केंद्र सरकार की शुरू से ही मंशा पंजाब-विरोधी रही है। कभी पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ से सम्बन्धित लोकतांत्रिक अधिकारों को खत्म करने की बात की जाती है और कभी चंडीगढ़ में कार्यरत कर्मचारियों पर केंद्र सरकार वाले नियम लागू करने का फ़ैसला किया जाता है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि अब हरियाणा को चंडीगढ़ में अलग विधान सभा के लिए जमीन देना पंजाब के साथ धोखे की इंतहा है, जिसमें पंजाब की मौजूदा सरकार सीधे तौर पर शामिल है। उन्होंने कहा कि पंजाब के मुख्यमंत्री श्री भगवंत सिंघ मान का दोगला चेहरा उस वक्त नंगा हुआ था, जब उसने विगत समय में एक टवीट कर अलग पंजाब विधान सभा के लिए ज़मीन की माँग की थी। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भगवंत सिंघ मान द्वारा निभाई जा रही साज़िशी भूमिका के कारण ही केंद्र सरकार ने चंडीगढ़ में पंजाब के अधिकारों को नजरअन्दाज कर हरियाणा के लिए ज़मीन देने की कार्यवाही की है।

उन्होंने कहा कि चंडीगढ़ पर केवल पंजाब का हक था, है और हमेशा रहेगा। उन्होंने कहा कि चाहे वर्तमान समय में १० एकड़ ज़मीन लेने के बदले में हरियाणा द्वारा पंचकूला में १२ एकड़ ज़मीन देने की बात भी सामने आ रही है, परन्तु यह पंजाबियों को धोखे में रखने का ही एक ढंग है। एडवोकेट धामी ने कहा कि केंद्र सरकार इस कार्यवाही पर तुरंत रोक लगाए और चंडीगढ़ से सम्बन्धित किये जाने वाले किसी भी फ़ैसले से पहले पंजाब के साथ जुड़ी प्रत्येक राजनीतिक पार्टियों, सामाजिक जत्थेबंदियों तथा धार्मिक प्रतिनिधि संस्थाओं के नुमायंदों के साथ परामर्श अवश्य किया जाये। उन्होंने पंजाब से संबंधित समूह दलों से अपील की कि इस साज़िशी फ़ैसले के विरुद्ध एक मंच पर इकट्ठे हों और इसका सख़्त विरोध किया जाये, ताकि यह फ़ैसला लागू न हो सके।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का १०४ वर्षीय स्थापना दिवस मनाया गया

श्री अमृतसर साहिब : १५ नवंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के १०४ वर्षीय स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह के दौरान संबोधित करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि इस सिक्ख संस्था ने एक सदी से अधिक अपने गौरवमयी सफ़र के दौरान जहाँ गुरुद्वारा साहिबान के प्रबंध को पंथक

भावना के अनुसार चलाया है, वहीं सिक्खी प्रचार और सिक्ख सरोकार की सुरक्षा के लिए भी हमेशा अग्रणी भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि सिक्खों की विलक्षण विद्यमानता को उभारने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सक्रिय भूमिका निभाते हुए सदा सत्य की आवाज़ बुलंद की है। यह भी कटु सत्य है कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी शासन में शासन की भांति रहते हुए सदा सरकार की नज़रों में रड़कती रही है।

उन्होंने कहा कि तथाकथित महंतों से पवित्र गुरुधामों को आज़ाद करवाने के लिए कई कुर्बानियों के बाद १९२० ई. में अस्तित्व में आई सिक्ख संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की अस्मिता को कमजोर करने के लिए आज लगातार घटिया यत्न किए जा रहे हैं। सरकारों द्वारा इसके क्षेत्र को सीमित करने की लगातार चालें चली जा रही हैं। तख़्त श्री पटना साहिब, तख़्त श्री हजूर साहिब, दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का प्रबंध अप्रत्यक्ष रूप से सरकारों द्वारा अपने हाथों में लेने के बाद अब उनकी मंशा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रबंध को हथियाने की है। उन्होंने पंथ विरोधी ताकतों का मुकाबला करने के लिए सिक्ख कौम को श्री अकाल तख़्त साहिब के नेतृत्व में एकजुट होने की अपील की और वचनबद्धता प्रकट की कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी अपने इतिहास, रिवायतों और कार्यों की दिशा में सिक्खी की चढ़दी कला के लिए सदा तत्पर रहेगी।

इससे पूर्व गुरुद्वारा श्री मँजी साहिब दीवान हाल में श्री अखंड पाठ साहिब के भोग के पश्चात् सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के हजूरी रागी जत्थे ने गुरबाणी-कीर्तन किया और अरदास के पश्चात् पवित्र हुकमनामा कथावाचक भाई हरमित्तर सिंघ ने श्रवण करवाया।

इस अवसर पर धर्म प्रचार कमेटी के सदस्य भाई अजायब सिंघ अभ्यासी, ओएसडी स. सतबीर सिंघ (धामी), सचिव स. प्रताप सिंघ, स. बलविंदर सिंघ काहलवां, स. गुरिंदर सिंघ मथरेवाल, श्री दरबार साहिब के मैनेजर स. भगवंत सिंघ धंगेड़ा, उप सचिव स. हरभजन सिंघ वक्ता, स. मनजीत सिंघ तलवंडी, अधीक्षक स. निशान सिंघ, स. मलकीत सिंघ बहिड़वाल, इंचार्ज स. मेजर सिंघ, मैनेजर स. सतनाम सिंघ रिआड़, एडीशनल मैनेजर स. बिकरमजीत सिंघ झंगी, स. युवराज सिंघ, स. गुरतिंदरपाल सिंघ व संगत उपस्थित थी।

बड़े साहिबज़ादे चमकौर की जंग में पराक्रम का प्रदर्शन करते हुए

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN December 2024

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,
Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

गुरुद्वारा सीसगंज साहिब पातशाही नौवीं, दिल्ली

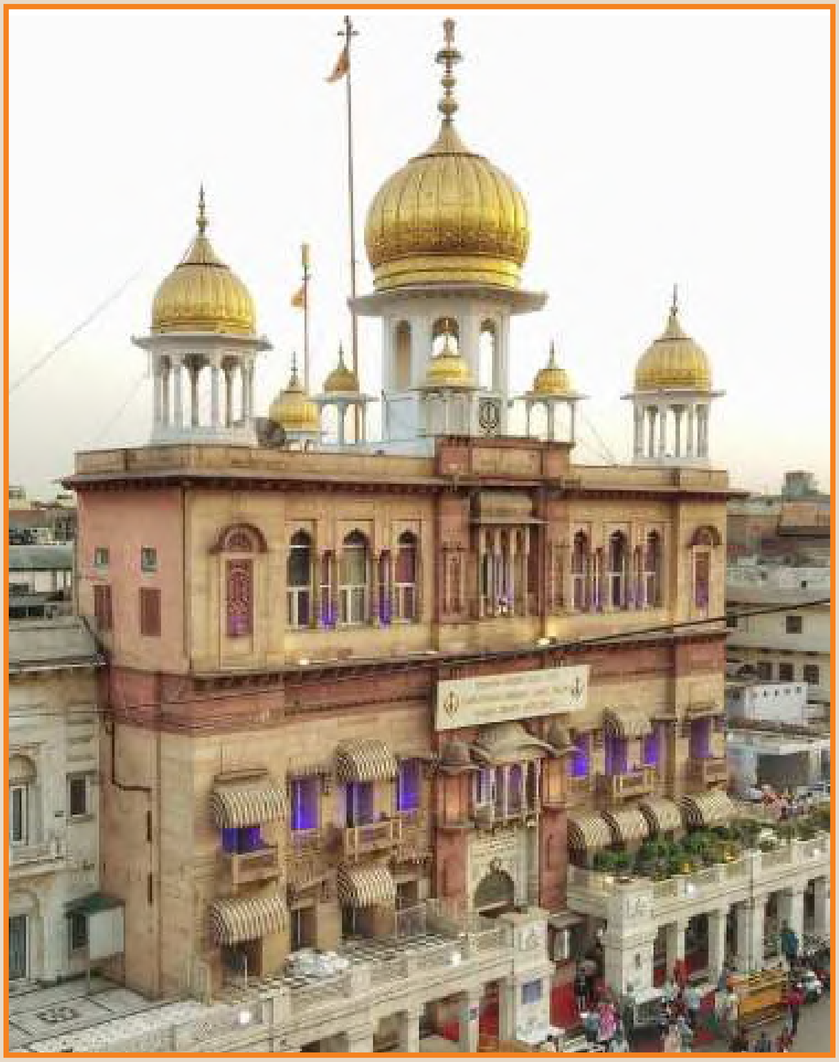

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh
Date : 7-12-2024